सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail : nadwa@sanchamet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	[illegible] 12/-
[illegible]	[illegible] 120/-
[illegible]	[illegible] 500/-
[illegible]	30 [illegible]

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफत व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफत व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

जनवरी, 2011 — वर्ष 09 — अंक 11

मअलउस्रियुस्रा

(कठिनाई के पीछे सरलता)

किसी आ़क़िल ने घड़ी के डाएल पर
लिखा रखा था इस वक़्त को भी जाना होगा
यह दुनिया जान लो दारुल मिहन है
अगर साबित रहे तो जन्नत का सिला होगा
शहादत के वक़्त होता है शहीद मेहनत में
हयाते जाविदां से फिर वह शादमाँ होगा
ना घबरा वक़्ते सख़्त से आसी
यह हक़ है मअ़लउस्रियुस्रा होगा

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझे कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अत: आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 9125894345

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
आसमानी मजाहिब	सम्पादकीय	5
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	8
हममें सुधार कैसे हो ?	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	10
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से ?	अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी	14
समाज सुधार क्यों और कैसे?	मौलाना सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	17
मुस्लिम समाज की चिन्ता	मौलाना सै0 मुहम्मद सानी हसनी नदवी	18
नव मुस्लिम विद्वान से एक मुलाक़ात	जाफर मसऊद हसनी नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	23
एक नागवार गुफ्तगू	ख़लिद लखनवी	25
दहेज कानूनों पर एक नज़र	रेणुका पामेचा	27
धरती पर ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव	मुहम्मद फिरोज़ अख़्तर	28
जनता की सेहत की अनदेखी क्यों ?		30
मुहर्रम के दस दिन के बाद	मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी	31
पचायत चुनाव		32
ख़वातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी	34
लाइब्रेरियों से दूरी विद्यार्थियों का दुर्भाग्य	अकबर जाहिद	36
हज़रत फारूके आज़म की शहादत	मौलाना अब्दुश्शकूर फारूकी	37
आबे ज़मज़म	डा0 एच0डी0 सिद्दीकी	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

कुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह आयत 37 से 39

अनुवाद : फिर सीख लीं आदम ने अपने रब से कुछ बातें, फिर मुतवज्जेह हो गया अल्लाह उस पर, बेशक वही है तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान[1]। हमने हुक्म दिया नीचे जाओ यहाँ से तुम सब[2] फिर अगर तुमको पहुँचे मेरी तरफ से कोई हिदायत, तो जो चला मेरी हिदायत पर न ख़ौफ़ होगा उन पर और न वह ग़मगीन होंगे,[3] और जो लोग मुनकिर (इन्कार करने वाले) हुए और झुटलाया हमारी निशानियों को वह हैं दोज़ख में जाने वाले, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

तफ़्सीर

1. जब आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का गुस्से भरा हुक्म सुना और जन्नत से बाहर आ गये तो शर्मिन्दगी और एहसास की हालत में रोने धोने में मसरूफ थे, उस हालत में हक तआला ने अपनी रहमत से कुछ कलिमात उनको इल्हाम के तौर पर बतलाये जिनसे उनकी तौबा कुबूल हुई वह कलिमात यह हैं "रब्बना जलमना अन फुसना" (आख़िर आयत तक)।

2. मतलब यह है कि हक तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा तो कुबूल फ़रमाई मगर फौरी तौर पर जन्नत में जाने का हुक्म न फरमाया बल्कि दुनिया में रहने का जो हुक्म हुआ था उसी को क़ायम रखा क्यों कि मसलहत का तक़ाज़ा यही था, ज़ाहिर है कि ज़मीन के लिये खलीफा बनाए गये थे न कि जन्नत के लिए, और अल्लाह तआला ने यह फ़रमा दिया कि जो हमारे फ़रमाबरदार होंगे उनको दुनिया में रहना मुज़िर न होगा बल्कि मुफ़ीद, हाँ जो नाफ़रमान हैं उनके लिए जहन्नम है और इस फर्क़ व इम्तिहान के लिये भी दुनिया ही मुनासिब है।

3. जो सदमा और अन्देशा किसी मुसीबत पर उसके होने से पहले होता है उसको "ख़ौफ़" कहते हैं और उसके वाक़े (घटित) हो चुकने के बाद जो ग़म होता है उसको "हुज़्न" कहते हैं, मसलन किसी मरीज़ के मर जाने के ख़्याल पर जो सदमा है वह ख़ौफ़ है मर जाने के बाद जो सदमा है वह "हुज़्न" है, इस आयत में जो ख़ौफ़ व हुज़्न दुनियावी मुराद लिया जाये तो यह कि जो लोग हमारी हिदायत के मुवाफ़िक़ चलेंगे उसमें इस अन्देशे की गुन्जाइश नहीं कि शायद यह सच्ची हिदायत न हो शैतान की तरफ से धोखा और मुग़ालता हो और न वह इस वजह से कि उनके बाप से अब बहिश्त छूट गई ग़मज़दह होंगे क्योंकि हिदायत वालों को अनक़रीब जन्नत मिलने वाली है और अगर आखिरत का ख़ौफ़ व हुज़्न मुराद हो तो यह मतलब होगा कि क़ियामत को अहले हिदायत को न ख़ौफ़ होगा न हुज़्न, मगर हुज़्न (रंज) का न होना तो बेशक बजा लेकिन ख़ौफ़ की नफ़ी फ़रमाने पर ज़रूर यह ख़लजान होता है कि उस रोज़ ख़ौफ़ तो हज़राते अंबिया अलैहिस्सलाम तक को होगा, कोई भी ख़ौफ़ से खाली न होगा, तो बात यह है कि ख़ौफ़ दो तरह का होता है कभी तो ख़ौफ़ का बाइस और मरजअ खाएफ यानी डरने वाले में पाया जाता है जैसे बादशाही मुजरिम जो बादशाह से डरता है तो ख़ौफ़ का मौजिब जुर्म है जो मुजरिम की तरफ लौटता है और कभी ख़ौफ़ का सबब मुखव्वफमिन्हु यानी जिससे डरते है उसमें कोई ख़ास बात होती है, मसलन अगर कोई शख़्स किसी बादशाह साहबे जाहे जलाल के रूबरू या शेर के रूबरू हो तो उसके खाएफ होने की यह वजह नहीं कि उसने बादशाह या शेर का जुर्म किया है बल्कि क़हरो जलाल सुल्तानी और हैबत व ग़ज़ब और शेर की दरन्दगी ख़ौफ़ का सबब है जिसका मरजअ ज़ाते सुल्तानी और खुद शेर है। आयत से पहली क़िस्म की नफ़ी हुई न दूसरी क़िस्म की, शुब्हा तो जब हो सकता था कि "ला ख़ौफ़ अलैहिम" की जगह "ला ख़ौफ़ फीहिम" या "ला यख़फून" फरमाते।

शेष पृष्ठ.....6 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

बेज़िक्र की मज्लिस

–अनु0 नजमुस्साकिब नदवी

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया जो लोग किसी मज्लिस से अल्लाह का ज़िक्र किये बग़ैर उठ जाएंगे तो गोया वह गधे की लाश के पास से उठे और उनको हसरत होगी (अबूदाऊद)

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया जो लोग किसी मज्लिस में अल्लाह का ज़िक्र न करें, या अपने नबी पर दुरूद न भेजें तो वह घाटे में रहेंगे। अब अल्लाह के इख्तियार में है वह चाहे उन पर अज़ाब करे या बख़्श दे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया जो बैठने की हालत में और लेटने के वक्त अल्लाह का ज़िक्र न करेगा व घाटे में रहेगा। (अबूदाऊद)

"ख़्वाब"

–अमतुल्लाह तस्नीम

"क़ुर्आन"

"अल्लाह के अजायबात में से रात में तुम्हारा सोना और दिन को उसके फज़्ल को तलाश करना है"।

(सूर: रूम)

"हदीस"

अच्छे ख़्वाब नुबुवत के बक़ाया में से है

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से सुना है फरमाया कि नुबुवत में सिवा बशारतों के कुछ बाक़ी न रहा। लोगों ने अर्ज किया बशारतें क्या हैं? आप ने फरमाया अच्छे ख़्वाब। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया कि "ज़माना जब ज़्यादा क़रीब होगा (अर्थात जब प्रलय निकट होगा) तो मोमिन का ख़्वाब मुश्किल से झूठा होगा" और मोमिन का ख़्वाब नुबुवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।

(बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि तुम में जो ज़्यादा सच्चा है उसका ख़्वाब भी ज़्यादा सच्चा होगा।

"हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की ख़्वाब में ज़ियारत"

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया जो मुझको ख़्वाब में देखेगा वह मुझे बेदारी में भी देखेगा, या मानों बेदारी में देखा। और मेरी सूरत में शैतान नही आ सकता।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

"ख़्वाब के आदाब"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया जब कोई अच्छा ख़्वाब देखो तो समझ लो कि अल्लाह तआला की तरफ से है तो फिर अल्लाह की तारीफ करो और उसको बयान करो।

एक रिवायत में है कि उसको अपने शुभचिन्तकों से बयान करो और अगर कोई बुरा ख़्वाब देखो तो शैतान की तरफ से समझो। अतः उसकी बुराई से पनाह माँगो और उसका ज़िक्र किसी से न करो तो उसके नुक़सान से बच जाओगे।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

"बुरे ख़्वाब से हिफाज़त"

हज़रत अबू क़तादह रजि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाह अलैहिवसल्लम ने फरमाया "अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ से है और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ से है। जो बुरा ख़्वाब देखे वह तअव्वुज़ पढ़ कर तीन बार बाईं तरफ थूक थतका दे तो फिर कोई नुक़सान न पहुँचेगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रजि0 से रिवायत है कि रसूल0 (सल्ल0) ने फरमाया जब कोई नागवार ख़्वाब देखे तो अपने बाईं तरफ तीन मर्तबा थूके और अल्लाह तआला की शैतान से तीन मर्तबा पनाह माँगे फिर दूसरे पहलू पर लेट जाए।

"झूठा ख़्वाब बयान करने का गुनाह"

हज़रत अबुल अस्कअ वासिला रजि0 से रिवायत है कि रसूल0 (सल्ल0) ने फरमाया यह बड़ा बुहतान है कि आदमी अपने बाप को छोड़ कर दूसरे को अपना बाप बनाये या वह बात कहे जो उसकी आँखों ने नहीं देखी (यानी झूठे ख़्वाब) या ऐसी बात कहे जो रसूल0 (सल्ल0) ने नहीं फरमाई (यानी हदीस गढ़ कर)। (बुख़ारी)

□□□□

(ईश धर्म)

आसमानी मज़ाहिब

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लामी तालीम के मुताबिक आसमानी मज़हिब सिर्फ तीन हैं इस्लाम, ईसाइयत और यहूदियत। इस्लाम ईसाइयत और यहूदियत की तस्दीक़ करता है और ईसाई और यहूदी को अहले किताब मानता है। अगर वह अपने मज़हब पर हों तो उन के ज़बीहे को हलाल ठहराता है जब कि उन्होंने अल्लाह का नाम लेकर ज़बह किया हो और उनकी औरतों से इस्लाम लाये बिना निकाह को जायज़ ठहराता है लेकिन इन दोनों दीनों को इस्लाम आने के बाद मंसूख मानता है। इस्लामी तॉलीमात के मुताबिक अब आखिरत में नजात हासिल करने के लिये इस्लाम लाना ज़रूरी समझता है।

इस्लाम यह मानता है कि अल्लाह तआला ने हर कौम में हादी (पैगम्बर) भेजे हैं इस लिये यह मुमकिन है कि दुनिया के और मजहिब भी आसमानी रहे हों लेकिन उनमें ऐसा बिगाड़ आया कि इस्लाम उनकी तस्दीक़ नही करता।

उन मज़हबों (धर्मों) में बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म बड़ी अहमियत रखते हैं। जहां तक बौद्ध धर्म का तअल्लुक़ है उस की अखलाकी और फलसफ़ियाना तालीमात दिल को लगती है लेकिन इस धर्म के चलाने वाले ने जो भी तालीमात दी हों इस वक्त के भारतीय बौद्धिक लिट्रेचर में खुले तौर पर खुदा का इन्कार मिलता है। फिर बुद्धिष्ट महात्मा बुद्ध ही को भगवान बुद्ध कहते हैं। इस तरह यह मज़हब अजीब पहेली बन कर रह गया है।

रही बात बौद्ध धर्म के समकालीन धर्म (हम अस्र मज़हब) जैन धर्म की तो यह तो अजीब भूल भुलय्या है। बौद्ध धर्म में तो एक भगवान बुद्ध थे, यहाँ हर तीर्थकर खुदा (भगवान) है तो इसे आसमानी मज़हब कैसे माना जा सकता है।

सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) सबसे पुराना धर्म है, जो महदूद (सीमित) रहा इस की बुन्यादी किताब वेद है, जिसको इस वक्त चार नामों से जाना जाता है। इस के हर सूक्ति पर एक ऋषि और एक देवता का नाम होता है, मंत्र (श्लोक) पढ़ने से अन्दाजा होता है कि यह ऋषि का कलाम है, जो देवता की शान में कहा गया है। कहीं से यह सुबूत नहीं मिलता कि ऋषि को ईश्वर ने इल्हाम किया। बल्कि इस का सुबूत मिलता है कि ऋषि कहता है कि यह मंत्र हमने बनाया है। (देखें मु0 फारूक एम0ए0 की किताब "वेदों का तआरूफ")

कहीं—कहीं नरक और स्वर्ग का ज़िक्र भी मिलता है, जिससे अन्दाजा होता है कि यह आसमानी तालीमात से माखूज़ (ग्रहीत) है लेकिन उसकी व्याख्या में वह बदलाव किया गया है कि अब उसको आसमानी किताब या इल्हामी किताब कहना सही नहीं है।

इधर कई वर्षों से कुछ विद्वानों का दावा है कि वेदों में कई जगह एक लफ्ज नराशंस है उससे मुराद (तात्पर्य) अल्लाह के आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) हैं लेकिन वेद की टीकाओं से इस की पुष्टि नहीं होती परन्तु किसी हिन्दू धर्म के विद्वान ने इस दावे को चैलेंज भी नही किया है। इस से यह सिद्ध किया जा सकता है कि शायद इस अर्थ की भी गुंजाइश है।

इस सब के बावजूद उलमाए इस्लाम ने वेदों को आसमानी किताब होने का एलान नही किया न हिन्दू हज़रात को अहले किताब कहा। इस लिये यहूदियों और ईसाइयों की तरह इनका अहले किताब होना यक़ीनी नही है। सत्य क्या है इस को अल्लाह ही जानता है।

सनातन धर्मी अवतार वाद को मानते हैं उनके नजदीक जब संसार में बहुत बिगाड़ आ जाता है तो भगवान स्वयं किसी जीव की शक्ल में अवतार लेकर संसार का सुधार करते हैं। चुनांचे उनके नज़दीक राम चन्द्र जी अवतार थे, श्री कृष्ण जी अवतार थे, कछुवा, मछली और सुअर की शक्ल में भी भगवान दुनिया

में आये हैं। उनके यहां रसूल (सन्देष्टा) का कहीं भी जिक्र नहीं है। हमारा ख्याल है कि रसूल के सिलसिले ही को बिगाड़ कर अवतार का नाम दिया गया, लेकिन जो अवतार गिनाये गये हैं उनमें मशहूर पैगम्बरों में से किसी का भी नाम नहीं है, फिर जब जानवरों तक को अवतार मान लिया गया तो अवतार को रसूल से जोड़ना हिमाकत है। इन का अक़ीदा है कि कल्की अवतार अभी बाक़ी है। सनातन धर्मी कल्की अवतार के इन्तिजार में तो हैं लेकिन कोई हिन्दू नराशंस के आने के इन्तिज़ार में नहीं हैं। हिन्दू धर्म में आर्य समाज जिनका बहुत बड़ा विद्वान स्वामी दयानन्द सरस्वती गुज़रा है जिसने चारों वेदों का अनुवाद किया वह तो अवतारवाद को नहीं मानता न उसने किसी नराशंस के आने का जिक्र किया है। वेदों के दूसरे अनुवादों में भी किसी नराशंस के आने का ज़िक्र नही मिलता ऐसे में नराशंस से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को समझना ख़ुश फहमी के सिवा कुछ नही है। इस तरह वेदों का आसमानी होना और हिन्दू हजरात का अहले किताब का होना सुबूतों के लिहाज से मशकूक है।

हो सकता है वेद आसमानी रहे हों लेकिन आर्य महा कवियों और ऋषियों ने उसमें ऐसा ख़ल्त मल्त किया कि उन का आसमानी होना मशकूक हो गया यह मेरा ही नहीं बड़े बड़े हिन्दू विद्वानों का भी कथन है देखो ''वेदों का तआरुफ'' द्वारा मु0 फारूक एम0ए0। रहा अवतार का मसअला तो यह तो भारतीय वहदतुलवजूद (एकोय द्वतीय नास्ति) की देन है।

नतीजा यह निकला कि यकीनी तौर पर आसमानी मजहब सिर्फ तीन मज़हबों को कहा जा सकता है ईसाई मज़हब, यहूदी मज़हब और इस्लाम, इनमें से सिर्फ इस्लाम अपनी अस्ल हालत पर मौजूद है। यहूदियत और ईसाइयत अपनी अस्ली हालत खो चुके हैं और मंसूख़ हैं। रहे दूसरे मज़हब तो वह हो सकता है आसमानी रहे हों मगर उन की तस्दीक़ नहीं हो पा रही है। फिर इस्लामी तालीमात के मुताबिक मंसूख हो चुके हैं।

❑❑❑❑

कुर्आन की शिक्षा ....

अल्लाह की यह किताब पवित्र कुर्आन जिसमें पिछली कौमों के हालात और तौहीद व शिर्क (एकेश्वरवाद अनेकेश्वरवाद) का फर्क और नेकी और बदी का अन्जाम (परिणाम) प्रभावशाली ढंग से बताया गया, यह किताब अरबी की ऐसी फ़सीह ज़बान में उतारी गई कि इसको सुनकर अरब यह यक़ीन करने पर मजबूर हो गये थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम जबकि उम्मी हैं खुद से ऐसी जानकारी नहीं बयान कर सकते, फिर इसमें ऐसी फसाहत व बलागत और ताकत (सुभाषरण, सरलता और शक्ति) है जो इन्सानों के बस की नहीं, यह ज़रूर ऊपर से रब्बुलआलमीन की तरफ़ से भेजी गई है, इस तरह यह किताब इन्सानी ताक़त से बाहर होने की वजह से एक मोजिज़ा (ईश्वरीय चमत्कार) बनी यह ''मोजिज़ा'' नबीये आख़िरूज़्ज़मा (अन्तिम नबी) को दिया गया, जिस से लोगों को यह यक़ीन कराया जा सके कि आप जो कह रहे हैं वह आप की ताक़त व सलाहियत (क्षमता) से आगे की बात है, और यह आसमान की तरफ़ से पैग़ाम आने की खुली दलील है, चुनांचे साबित हुआ कि यह अल्लाह की तरफ़ से ''वही'' है और उसकी हर ''आयत'' अल्लाह की एक निशानी है और ''मोजिज़ा'' है, और वाक़िआत से भी यही साबित हुआ, क्योंकि जिसने भी ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) होकर इसको सुना वह प्रभावित होकर ईमान ले आया, इस तरह बड़ी संख्या ईमान लाने वालों की ऐसी थी जो कलामे इलाही सुनकर ईमान लाई।

ग़लत अक़ीदों के सुधार की दअवत

मक्का मुकर्रमा पूरे अरब देश का केन्द्रीय पवित्र स्थान था, इसलिए यहाँ के लोगों को सत्य दीन इख़्तियार करने की दअवत देना ज़ियादा ज़रूरी और अहमियत का काम था कि यहाँ जो होगा उसका असर (प्रभाव) पूरे अरब पर पड़ेगा, इसलिए आप बराबर काम में लगे रहे और जहाँ क़ाबिले अमल था अपनी बात लोगों के सामने रखते रहे कि एक अल्लाह

पर ईमान लाओ, बुतों की इबादत छोड़ो, तुमको यह बुत और मूर्तियाँ कुछ भी फ़ाइदा नहीं पहुँचा सकती हैं और अल्लाह के भेजे हुए नबी को मानो, यह अल्लाह के आखिरी नबी हैं, अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा, और इस हकीक़त को भी तसलीम करो कि इस मौजूदा जिन्दगी के बाद की भी एक जिन्दगी है, वह आख़िरत की जिन्दगी है, इसके लिए तैयारी करो, दुनिया की जिन्दगी तो आख़िरत की जिन्दगी की खेती है, जो यहाँ बोओगे वह वहाँ खाओगे।[1]

काफिरों और मुशरिकों के अकीदे में फ़रिश्तों और जिन्नों के वजूद को मानने का अक़ीदा भी था, लेकिन वह फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियां क़रार देते थे, गोया कि उनको भी ख़ुदा की सी ताक़त रखने वाला समझते और ऐसा ही मुक़द्दस (पवित्र) जानते और जिन्नों को बुरी रूहें समझकर उनको प्रभावकारी समझते और उनको ख़ुश करने के लिए उनकी तअज़ीम (सम्मान) और उनसे मदद लेने की जरूरत समझते थे, और भी इस सिलसिले में तरह–तरह की ख़ुराफ़ात और ग़लत ख़्यालात दिलो–दिमाग़ में बिठा रखे थे, नबी आख़िरूज़्ज़मा (अन्तिम नबी) हुज़ूर सललल्लाहु अलैहिवसल्लम ने उनके ख़्यालात की दुरूस्ती फरमाई कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं और वह भी अल्लाह के हुक्मों के मुहताज और पाबन्द हैं, अलबत्ता यह न देखी जाने वाली मख़लूक़ हैं। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से दिये हुए हुक्मों की तअमील के लिए मुकर्रर हैं और उसी के मुताबिक काम करते हैं और जिन्नात इन्सानों की तरह अल्लाह की मख़लूक़ हैं, उन पर भी इन्सानों की तरह अपने ख़ालिक़ को मानने और अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की इबादत करने को ज़रूरी क़रार दिया गया है, इन्सानों को अल्लाह ने उत्तम सृष्टि बनाया, और इन्सानों के ही सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति को सारी सृष्टि में सबसे उच्चतम क़रार दिया।

1 सीरत हलबिया :1/461

सवाल और जवाब

प्रश्न : क्या यह सही है कि हाजी पर दो कुर्बानियां हैं ?

उत्तर : अगर हाजी ने हज तमत्तोअ़ या किरान किया है तो उस पर एक कुर्बानी हज की वाजिब है। रही माल की वार्षिक कुर्बानी तो अगर हाजी 10,11,12 जिल हिज्ज को मुसाफिर नही रहा मुक़ीम हो गया, तो उस पर माल वाली कुर्बानी भी वाजिब हुई चाहे मिना में करे या अपने घर वालों को हुक्म देकर अपने घर कराए लेकिन अगर कुर्बानी के दिनों में मुसाफ़िर रहा यानी उन दिनों में मक्का मुकर्रमा में 15 दिन रुकने का इरादा न हो सका तो माल वाली कुर्बानी उस पर वाजिब नही।

प्रश्न : एम0बी0बी0एस0 की पढाई पढने के लिये बैंक से लोन लेना कैसा है ? जब कि उस पर ब्याज देना पड़ता है।

उत्तर : मुफ़्ती साहब से पूछा गया उन्होंने जवाब दिया सूद की अदायगी के साथ लोन लेना दुरुस्त नही है। आप "इस्लामिक फिक़्ह एकेडमी" 161-F, Jogabai Post Box No. 9746 Jamia Nagar New Dehli-110025 से पूछें कोई हल निकलेगा।

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षक बन्धुओं के लिये

समाजियत और तालीम

— डॉ0 सलामतुल्लाह

अनु0 : एम0 हसन अंसारी

सम्बन्ध पैदा करना

लेसन प्लॉन में यह काम अनेक प्रकार से किया जा सकता है। टीचर नये लेखन की परिकल्पनाओं से मिलते–जुलते कँसेप्टस (परिकल्पनाओं) की तरफ इशारा कर सकता है। और मुक़ाबला के ज़रियः पुराने कँसेप्टस और नये कँसेप्टस की समानता से परिचय करा सकता है। या वह बिल्कुल विलोम परिकल्पनायें बच्चों की सूझ के दायरे में ला सकता है। इनमें से प्रत्येक विधि नयी जानकारी को पुख़्ता करने में मदद देगा। अतः इस सोपान का उद्देश्य यह है कि तुलनात्मक विधि से नये विचारों की श्रंखला को मन–मस्तिष्क में उचित स्थान दिया जाये। तुलना करने का काम पूरे का पूरा बच्चों का होना चाहिए। क्योंकि यह बिल्कुल बेकार सी बात है कि वह किसी ऐसी चीज़ का किसी ऐसी चीज़ से मुक़ाबला करें, जिससे वह अपरिचित हैं, और यह कि केवल इस प्रकार की तुलना करायी जाये जो वास्तव में बच्चों को सोचने का मौक़ा देते हों और असल पाठ को सुस्पष्ट करते हों। जैसे इटली का भूगोल पढ़ाते समय उस की स्थिति और प्राकृतिक दशाओं की तुलना भारत की स्थिति और प्राकृतिक दशाओं से करायी जा सकती है। या औरँगज़ेब का हाल पढ़ाते समय उसकी शासन व्यवस्था की अकबर की शासन व्यवस्था से तुलना करायी जा सकती है।

निष्कर्ष

इस का मतलब सामान्य निष्कर्ष निकालना है। गणित, भाषा और प्रकृति के कुछ पाठों में तुलना का सोपान स्वाभाविक रूप से "निष्कर्ष" के सोपान से जो मिलता है और नतीजे के तौर पर उस से कोई क़ानून या सिद्धान्त बहुत सावधानी से उपयुक्त प्रश्नों के द्वारा निकलवाना चाहिये। जैसे अनेक धातुओं पर गर्मी का असर देखने के बाद यह नतीजा निकाल सकते हैं कि धातुएँ गर्म करने से फैलती हैं।

यह सोपान एक क़दम और आगे ले जाती है। यह ज्ञान के अंशों को एकत्र करने में मदद देता है। आँशिक ज्ञान किसी एक सम्पूर्ण ज्ञान के तहत आ जाता है। निष्कर्ष की प्रक्रिया बहुत पेचीदा है। इस कारण छोटे बच्चों के शिक्षण में इस से अधिक काम नहीं लिया जा सकता। लेकिन छोटे बच्चे भी एक हद तक इस प्रकिया को समझने की क्षमता रखते हैं। वह कभी–कभी इस प्रकिया की बारीकियों को समझे बिना बहुत आसानी से आम नतीजे निकाल सकते हैं। टीचर के सामने यह कठिनाई नहीं है कि वह बच्चों से सामान्य निष्कर्ष निकलवा सकता है बल्कि असल कठिनाई यह है कि उन्हें बिना सोचे समझे निष्कर्ष निकालने से किस प्रकार बाज़ रखा जाय। बच्चा माँ की गोद से यह काम करना सीखता है। वह हर मर्द को "बाबा" और औरत को "माँ" कहता है। बिना पर्याप्त विचार के निष्कर्ष निकालने से बाज़ रखने के लिए "सम्बन्ध पैदा करने" के सोपान से सावधानी के साथ निकलना चाहिये। पढ़ाते समय इस स्टेज को "निष्कर्ष" की मसलहत पर नज़र रखते हुए प्रस्तुत करना चाहिए। मिसाल के तौर पर "चौपाये" के पाठ में अगर टीचर को इस बात का खटका है कि बच्चे "निष्कर्ष" के द्वारा इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि कोई चौपाया अण्डा नहीं देता, वह सबके सब दूध देते हैं तो पूर्व सोपान में अपवाद से आगाह कर देना चाहिए कि मेंढक, छिपकली, मगरमच्छ आदि चौपाये होते हुए भी अण्डे देते हैं।

पुनरावृत्ति (चौथा सोपान)

इस सोपान का बहुत सा काम जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, दूसरे सोपान के दौरान किया जा सकता है। इस लिये इसे दोबारा करने की ज़रूरत नहीं है, किन्तु कभी–कभी यह देखने के लिए कि पूरा पाठ किस हद तक कामयाब रहा है, और नयी जानकारी को पुख़्ता करने के लिये तीसरे सोपान के बाद दोहराने की ज़रूरत होती है।

विधि

पाठ में जो चीज़ें पढ़ाई गई हैं उन्हें इस स्टेज पर बच्चों से प्रश्नों के द्वारा मालूम करना चाहिए। अगर बच्चे किसी सवाल का जवाब सही न दें तो वह बात फिर से समझानी चाहिए।

प्रयोग (पाँचवां सोपान)

अन्तिम सोपान प्रयोग का है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि नयी जानकारी दे दी जाये उसे पूर्व ज्ञान से जोड़ दिया जाये और उनसे यदि सम्भव हो निष्कर्ष निकलवा दिये जायें, बल्कि यह भी ज़रूरी है कि नई जानकारी के प्रयोग के अवसर प्रदान किये जायें। क्योंकि जब तक नई जानकारी जीवन की घटनाओं में प्रयोग नहीं की जाती, वह मात्र एक बेकार पूँजी की हैसियत रखती है। किसी चीज का जानना और प्रयोग करना दो अलग–अलग चीज़ें हैं। वह लोग जो जानते कम हैं लेकिन जितना जानते हैं, इस्तेमाल कर सकते हैं, कारकर्दगी के ऐतबार से कहीं बेहतर इन्सान हैं, उन लोगों की तुलना में जिनका मस्तिष्क मालूमात के ढेर से पटा पड़ा है, लेकिन वह इसे कारआमद तरीके से इसे इस्तेमाल नहीं करते। कारआमद (व्यवहार में) तरीके से इसे इस्तेमाल का अवसर प्रदान करना बहुत ज़रूरी है। बल्कि यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि इस सोपान के बिना पाठ एक निर्जीव शरीर की तरह है। पाठ के प्रथम चार सोपान का काम मालूमात को बेहतरीन शक्ल में पेश करना है। और इस सोपान का काम एक व्यापक क्षेत्र उपलब्ध कराना है, जिस में इन मालूमात को सही तौर पर इस्तेमाल किया जा सके।

सम्भव है कि बच्चे किसी बात की जानकारी रखने के बावजूद इसे प्रयोग करने की क्षमता न रखते हों। लेखक का व्यक्तिगत अनुभव है कि एक कक्षा में सब बच्चे गज़, फीट और इन्च (मीटर सेन्टीमीटर) के पैमानों की पूरी जानकारी रखते थे लेकिन जब उन से मेज़ की लम्बाई नापने को कहा गया तो उनमें सिर्फ कुछ ही नाप सके। इस का कारण यह है कि उन की जानकारी मात्र सैद्धान्तिक थी और उनका व्यवहारिक जीवन से सम्बन्ध नहीं था। इस अन्तिम सोपान का काम यही है कि बच्चों के सामने अलग–अलग क़िस्म की समस्यायें रखीं जाएं जिनमें वह नई मालूमात का इस्तेमाल कर सकें। जैसे बच्चे मानचित्र या मूर्तियाँ बनायें या भूगोल के नियम जो उन्होंने पढ़े हैं, एक काल्पनिक यात्रा के वर्णन में इस्तेमाल करें, वह कोई समस्या हल करें, निबन्ध लिखें, प्रयोग करें, विज्ञान के उपकरणों के चित्र बनायें, इतिहास के चार्ट तैयार करें, या भाषा में समान अर्थ वाले मुहावरे व शब्द तलाश करें। अतः बच्चों को नयी जानकारी प्रयोग करने के जितने अधिक अवसर सम्भव हों दिये जायें।

निर्देश

टीचर को चाहिए कि पाठ को इन सोपानों में बाँटने के सिद्धान्त की आँख बन्द करके पाबन्दी न करे, बल्कि इस की मंशा को समझ और व्यवहार में लाये। यद्यपि प्रत्येक पाठ में सभी सोपानों का होना अनिवार्य नहीं है तथापि इस के क्रम को बनाये रखना सफल शिक्षण के लिये अति आवश्यक है।

एक अच्छा लेक्चरर बिना किसी "प्रस्तावना" के प्रौढ़ों के मजमें पर असर डाल सकता है, क्योंकि प्रौढ़ मानसिक पुख़्तगी के कारण जानते है कि वह घटनायें जो इस सिद्धान्त की व्याख्या करेंगे, आगे चलकर प्रस्तुत की जायेंगी, किन्तु बच्चों की समझ से यह परे है। उनके लिए मात्र कल्पनायें उलझन पैदा करती हैं।

अनुभवी टीचर्स अपने पाठ इस प्रकार क्रमबद्ध करने की ज़रूरत महसूस करते हैं। क्योंकि इसके बाद रास्ते में भटकने की आशंका नहीं रहती। इसके बिना भटक जाने का खटका बना रहेगा, और बहुमूल्य समय नष्ट कर देगा। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि पहले से पाठ को क्रमबद्ध कर लेने के बावजूद, पाठ के दौरान ऐसी समस्यायें आ सकती हैं, जिन्हें टीचर को तत्काल हल करना होगा। कभी–कभी कक्षा के बच्चे ऐसे प्रश्न करेंगे, जिनके कारण प्रस्तावित क्रम में परिवर्तन करना पड़ेगा। वास्तव में ऐसे समय में टीचर की सूझबूझ और वाक्यपटुता (हाज़िर जवाबी) की परीक्षा होगी। अतः टीचर हमेशा अन्धे की तरह पाठ संकेतों की लकड़ी पकड़कर अपना रास्ता तय नहीं कर सकता लेकिन पाठ संकेत तैयार कर लेने से यह फ़ायदा ज़रूर होता है कि टीचर के मस्तिष्क में पाठ का एक स्पष्ट चित्र पहले से मौजूद रहता है कि उसे क्या पढ़ाना है और किस तरह पढ़ाना है। टीचर का अनावश्यक अपने प्रस्तावित रास्ते से हटने की कोई ज़रूरत नही है।

पाठ पढ़ाने के बाद टीचर को अपने पाठ पर स्वयं समालोचना करनी चाहिए। प्रस्तावित पाठ में क्या कमियाँ थी, पाठ के कौन से अंश सफलतापूर्वक नहीं पढ़ाये जा सके, उनको कैसे बेहतर किया जा सकता है। पाठ के सुपरवाइज़र की वह इसी भावना से आलोचना करें, और पाठ को बेहतर बनाने के लिये हमदर्दाना सुझाव दें।

जारी............

आखिरी किस्त

हममें सुधार कैसे हो ?

– मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

अनु0– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

विचार व चिन्तन में सुधार मुहम्मद (सल्ल0) की आज्ञा पालन में निहित

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने कहा कि पवित्र कुर्आन में है "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरी चाल चलो तो अल्लाह के प्रिय बन जाओगे" अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष दोनों ऐतबार से पद चिन्हों पर चलने से व्यक्ति अल्लाह का प्रिय बन जाता है। दूसरे स्थान पर कहा गया "नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) की मानो ताकि तुम पर दया की जाए" मालूम हुआ कि यदि उनकी चाल चलोगे तो प्रिय बन जाओगे और उनका कहा मानोगे तो अल्लाह की कृपा के अधिकारी हो जाओगे। यहाँ पे कहा गया कि अनुकम्पा तुम पर होगी, और अनुकम्पा हो तो हम ठीक हो जायेंगे अर्थात हमारी सोच सही हो जायेगी।

सहाबा में जो परिवर्तन आया था वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की संगत में आने से आया था। बस एकदम से बदल गये, विचार भी बदल गये, दिल भी बदल गया, पहले सोच कुछ और थी, अहंकार भरा हुआ था, दंभ भरना, लोगों को तुच्छ समझना और अपमान करना उनकी नीति थी, लेकिन जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए एकदम से बदलाव आ गया। अब एक दूसरे को आगे बढ़ा रहे हैं कि आप सर्वोत्तम है, आप हमसे सर्वश्रेष्ठ हैं और हम तो बिल्कुल कुछ भी नहीं है। लेकिन उसके साथ–साथ सत्य पर अडिग रहते थे। ये नहीं कि बस जो बात सामने आ गई आखें बन्द करके मान लिया। नही, आखें खुली रखते थे। कान के दरवाज़े खुले रखते थे। लेकिन बस ये पहरा बैठा देते थे। पहरा कैसे बैठाते थे? ग़लत बात जाने न पाए, ग़लत आँख उठने न पाए और दिमाग़ में ग़लत विचार आने न पाएं। इधर–उधर की चीज़ें आने न पाएं। आईं तो चली जाएं। इसलिए कि दिमाग़ सड़क की तरह है, उसकी हैसियत सड़क की है, उस पर सवारी चलती है, ट्रक, बस, मोटर साइकिल, सारी सवारियाँ चलती है, दिमाग़ की सड़क पर, लेकिन जाम न लगे। सारी सवारियाँ ख्यालों में आएं मगर रुकने न पाएं, रुकी तो पूरा जाम लग जायेगा, तो यूँ समझ लें कि अल्लाह मियाँ ने मानस (दिमाग़) को जी0टी0 रोड बनाया है, हर सवारी उस पर चलती है। आता तो बहुत कुछ है लेकिन ज़रूरी ये है कि ठहरे ना अब अगर अच्छी चीज़ें हैं तो वह ठीक है लेकिन जो इधर–उधर की चीज़ें हैं वह ठहरने न पाए, निकल जाएं।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने मन–मस्तिष्क का पहले सुधार करें। फिर कर्मों में सुधार स्वय हो जायेगा। जब हम नेक बन जायेंगे, तो अपने सुधार के बाद अल्लाह हमें समाज सुधारक बना देगा, जब अल्लाह सुधारक बनाएगा और फिर जब हम निकल के सामने आएंगे तो फिर जिससे कह देंगे मानता चला जाएगा और सुधार होता चला जाएगा। हमारे जितने मज़हबी बुजुर्ग थे उनका हाल क्या था? स्वयं वह ऐसे नेक बने, उनमें ऐसा सुधार हुआ कि अल्लाह ने उनसे बहुत बड़ा काम लिया। अल्लाह के बड़े–बड़े बन्दे उनके पास आते थे और वह एक वाक्य कहते थे और सुधार हो जाता था।

हज़रत रायपुरी (रह0) का रूतबा

हज़रत रायपुरी (रह0) जो हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) के गुरू (शेख) थे। अल्लाह ने उनको बहुत बड़ा सम्मान प्रदान किया था। हज़रत मौलाना इलियास (रह0) (संस्थापक तब्लीगी जमात) भी उनके पास बैठने और संगत से लाभ उठाने जाते थे। एक बार हज़रत मौलाना इलियास (रह0), हज़रत रायपुरी (रह0) के पास गए। मौलाना इलियास (रह0) अव्वाबीन की नमाज़ देर तक पढ़ते थे। उस समय हज़रत मौलाना रायपुरी (रह0) को तकलीफ थी, गैस की

शिकायत थी। जल्दी से छोटी सी नफ्लें पढ़कर बैठ जाते थे। इस तरह हज़रत छोटी नफ्लें पढ़कर बैठ गए। मौलाना इलियास (रह0) ने नियत बाँध ली। दो रकात पढ़ने के बाद नफ़्लें छोड़ दी और उनके पास आकर बैठ गये और कहने लगे हज़रत हमारी नफ़्लों से बेहतर तो आपकी सेवा में बैठना है।

हज़रत रायपुरी (रह0) का क्या हाल था?

हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) ने उनकी एक मजलिस का हाल सुनाया कि हज़रत रायपुरी (रह0) के पास बड़े–बड़े व्यापारी आए हुए थे। हज़रत के सेवक चाहते थे कि हज़रत कुछ उपदेश दे दें ताकि जो ये बड़े–बड़े व्यापारी आए हैं उनके मानने वाले हो जाएं। हज़रत रायपुरी (रह0) को इसकी कोई चिन्ता न थी कि कोई मानें या न माने। हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) का भी यही हाल था। न माने तो अच्छा है, वह तो परेशान होते थे मानने वालों से। बहरहाल हज़रत रायपुरी (रह0) बैठे हुए थे। एक व्यक्ति ने कहा, हज़रत! धैर्य (सब्र) का क्या अर्थ है। हज़रत चुप्पी साधे रहे, बोले ही नहीं। वह समझे कि हज़रत ने सुना ही नहीं। फिर कहा, हज़रत धैर्य का क्या अर्थ है? हज़रत रायपुरी (रह0) ने कहा ये अली मियाँ नदवी बैठे हैं, उनसे पूछ लो। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) ने कहा, हज़रत! मुझे तो उसका शाब्दिक अर्थ मालूम है, अरबी भाषा के अनुसार थोड़ा बहुत तो बता सकता हूँ कि अरबी में क्या अर्थ है? हज़रत रायपुरी (रह0) कहने लगे, मुझे तो वह भी नही मालूम। फिर खामोशी।

ये लोग वास्तव में उच्च कोटि के थे। उनको इसकी चिन्ता ही न थी कि कोई माने या न माने, कोई पहचाने या पहचाने, कोई प्यार करे या न करे। अपने घर बैठे अल्लाह के लिए सारे मामले करते थे। आओगे तो अल्लाह के लिए, जाओगे तो अल्लाह के लिए। कुछ मसला उनके यहाँ ऐसा था नहीं, लेकिन उनकी ओर लोग खिंचे चले आते थे। एक शब्द कह देते थे तो सारे मसले हल हो जाते थे। मौलाना मंज़ूर नोमानी (रह0) हज़रत रायपुरी (रह0) के यहाँ गए और सन्तवाद (तसव्वुफ) के सम्बन्धित कुछ प्रश्न किये और हजरत ने चलते–चलते रास्ते में ही उत्तर दे दिया। उनका दिल खुल गया। समस्त कठिनाइयाँ दूर हो गई। हज़रत रायपुरी (रह0) कोई बाक़ायदा पढ़ाने का काम भी नही करते थे। लेकिन एक वाक्य से सुधार हो जाता था। इस अनुयायी समुदाय (उम्मत) की श्रेष्ठता में ये बात कही गई है कि अन्य जो अनुयायी समुदाय हैं वह तो कागज काला करते रहेंगे और बड़ी–बड़ी चीजें लिखते रहेंगे, लेकिन इस उम्मत के लोगों से अल्लाह ऐसे वाक्य कहलवा देगा कि बड़ी–बड़ी कौमों में सुधार की बयार चल पड़ेगी। ऐसी घटनाएं अस्तित्व में आई भी हैं।

एक वाक्य जिससे तातारियों का भाग्य बदल गया

जब तातारी मुसलमान हुए तो उनके इस्लाम लाने की रोचक घटना का वर्णन हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) करते हैं एक तातारी शहज़ादा शिकार के लिए बैठा हुआ था। वहाँ एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे। वह कहीं जंगल में चले जा रहे थे। अज़ान का वक़्त हुआ, उन्होंने अज़ान दे दी। शहज़ादे ने अज़ान सुनी तो, उसने कहा, कौन है जो ये चिल्ला रहा है? पकड़ कर लाओ। उनको पकड़कर लाया गया। उसने पूछा, तुम क्यों चिल्ला रहे थे? कहा अज़ान दे रहा था। उसने कहा ये अज़ान क्या होती है? उसको बड़ा गुस्सा आया, चूँकि वह ईरानियों से बड़ा खार खाता था। और वह बड़े–बुज़ुर्ग भी बेचारे ईरानी थे। अतः उसने पूछा कि तुम अच्छे या मेरा कुत्ता अच्छा? उन्होंने बड़े सन्तोष भाव से कहा कि ये निर्णय तो अभी नही हो सकता। उसे बड़ा क्रोध आया और कहने लगा कि बेहूदे ये क्या कह रहे हो? अभी फैसला करना पड़ेगा कि तुम अच्छे हो कि मेरा कुत्ता अच्छा है। उन्होंने बड़े इतमिनान से कहा यदि मेरा अंत ईमान (इस्लाम) के साथ हो जाए तो मैं अच्छा, और अगर ईमान पर खात्मा न हो तो ये कुत्ता अच्छा है। उसने पूछा ये ईमान क्या है? हृदय में परिवर्तन आ गया। बस एक वाक्य से दिल बदल गया। काया पलट गई। उन्होंने सच्चे मन से बात कही थी और सुधार हो जाने के बाद सुधारक बने थे अतः उसका परिणाम ये हुआ कि शहज़ादे ने कहा, मैं इस्लाम कुबूल करना चाहता हूँ लेकिन अभी शहज़ादा हूँ जब बादशाह बन जाऊँ तब याद दिलाना। जब वह बादशाह

हो गया और ताजपोशी हुई तो उस समय उन बुजुर्ग का देहान्त हो चुका था। अन्तिम समय में उन्होंने अपने बेटे से कहा था कि मेरे लिए तो अल्लाह ने ये सौभाग्य नहीं लिखा, तुम वहाँ जाना और उसे याद दिलाना।

बुजुर्ग के बेटे बड़ी मुश्किल से उसके दरबार में पहुँचे और निवेदन किया कि हुजूर! मैं ये कहने आया हुँ कि मेरे पिता जी का अंत ईमान पर हो गया है और उन्होंने मुझे वसीयत की है कि मैं जाकर आपको ये बात बता दूँ। वह इस ध्यान दिलाने पर बिल्कुल तैयार हो गया और कहा कि मैं पूरी तरह तैयार हुँ, आप मुझे कल्मा पढ़ाइये। उसके बाद अपने दो तीन मंत्रियों को बुलाया और कहा, देखो भाई! मैंने इस्लाम लाने का निर्णय लिया है, तुम लोगों का क्या इरादा है? इस पर उन्होंने कहा, हम तो पहले से ही इस्लाम को चाहते थे लेकिन बस आपके डर से कह नहीं पाते थे। अतः तातारियों की पूरी क़ौम मुसलमान हो गई। तो यही वाक्य थे जिन्होंने उनको वहाँ पहुँचा दिया। पहले के जो छोटे–छोटे जुम्लें थे वह काया पलट देते थे। हम आज इतनी देर से भाषण दे रहे हैं, लेकिन हो कुछ नहीं रहा है। बस यही अन्तर है कि हम लोगों की ज़बान से असर ख़त्म हो गया और ये आत्म सुधार न होने के कारण है।

धार्मिक प्रयास की असफलता का कारण अल्लाह से जुड़ाव की कमी

आज हम सब कुछ अपनी जबान से कह तो देते हैं लेकिन उसका प्रभाव ही नहीं पड़ता। लम्बे–लम्बे भाषण हो रहे हैं। लम्बे–चौड़े व्याख्यान दिये जा रहे हैं। समाज सुधार विषयक पर बड़ी बड़ी किताबें लिखी जा रही हैं। ज्ञात हुआ कि किताबों के ढ़ेर लगे हुए हैं लेकिन सुधार हो ही नहीं रहा है। बल्कि अगर गौर किया जाये तो खराबी बढ़ती जा रही है। पहले बिगाड़ आम लोगों में था अब ख़ास लोगों में आ गया। पहले ख़राबी बाज़ार में थी अब मस्जिदों में आ गई। मस्जिदों में जो पुण्य (ख़ैर) था वह बाहर नहीं जा रहा है बल्कि बाहर की जो बुराई है वह अन्दर आ रही है। जो भविष्यवाणी आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने की थी कि मस्जिदों में आवाजें बुलन्द होंगी तो आज वह चीज़ें हो रही हैं। मस्जिद का अदब खत्म हो रहा है और मस्जिद के जो फायदे थे कम होते जा रहे हैं। इमारतें तो अच्छी बनती चली जा रही हैं लेकिन नमाज जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं हो रही है।

शाह याकूब साहब रह0 का वाकया

हज़रत शाह याकूब मुजद्दिदी रह0 जिनके उपदेश संग्रह को हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 ने जमा किया है के पास एक बार कुछ लोग आए की हज़रत हम लोग मस्जिद बना रहे हैं। हजरत ने कहा ठीक है, बहुत अच्छी बात है। फिर कुछ अर्से बाद आए और कहा हज़रत मस्जिद बना दी मगर लोग नमाज़ पढ़ने नही आ रहे हैं। हज़रत शाह साहब ने कहा, मस्जिद के दरवाजे पर दीवार चुन दो। वह लोग समझे कि हज़रत ने सुना नहीं, हज़रत ऊँचा सुनते हैं। कहा, हज़रत! मस्जिद बन गई है, दुआ कर दीजिये नमाज़ पढ़ने लोग नही आ रहे हैं। हज़रत शाह साहब ने कहा, मैं कह तो रहा हुँ कि मस्जिद के दरवाजे पर दीवार चुनवा दो, बन्द कर दो। अब सब अदब से चुप और खड़े हो गए। शाह साहब ने कहा, तुम लोगों ने मस्जिद तो बना दी मगर ये नहीं बताया कि मस्जिद के अन्दर क्या मिलता है। फिर कहा, दीवार चुन दो, अन्दर दो आदमियों को बिठा दो और उनको 100–100 के नोट दे दो और बाहर जाकर ऐलान करो कि मस्जिद के अन्दर 100–100 के नोट बँट रहे हैं, तो देखो दीवार फाँद कर सब अन्दर आ जाएंगे।

इसलिए सिर्फ मस्जिद बनाने से काम थोड़े ही चलेगा ये बताने से काम चलेगा कि नमाज़ से क्या मिलता है? नमाज किला है, नमाज़ नाव है, नमाज़ मछली के लिए पानी है, नमाज अमृत (आबे हयात) है, नमाज़ ज़िन्दगी है, नमाज़ तरक्की का ज़रिया है, नमाज़ जन्नत का रास्ता है, नमाज़ मालिक की प्रसन्नता प्राप्त करने की विधि है और नमाज़ मन की शान्ति प्राप्त करने का माध्यम है। नमाज़ दुश्मन के मुक़ाबले की तैयारी के लिए सबसे बड़ा हथियार है, नमाज़ बीमारी से छुटकारा है, नमाज़ बुराइयों से रोकती है, नमाज़ अश्लीलता से दूर करती है। यहाँ तक की आदमी को नमाज के फ़ायदे बताए जाएं तो वह दंग रह जाये कि ये नमाज़ है? जी हाँ ये है नमाज़। हम लोगों की वह नमाज

अर्थात हाथ उठाया, अल्लाहु अकबर कह कर बाँध लिया, झुक गए, सज्दे में चले गए, उठ गए, ये तो जिस्म की नमाज़ हुई। फिर वही मसलअ आ गया, दिल की नमाज़, दिमाग की नमाज़ कहाँ गई? और नमाज़ जब हर ऐतबार से पढ़ेंगें तो नमाज़, नमाज़ होगी। जिस्म भी पढ़ रहा हो नमाज़, दिल भी पढ़ रहा रहा हो नमाज़, और रूह भी पढ़ रही हो नमाज़, जब सब मिलकर नमाज़ पढ़ेंगें तो ये नमाज़ उनको ऊपर उठा देगी। इसलिए देखने में कुछ चीजे छोटी है लेकिन बहुत बड़ी है।

ऐसा ही मुआमला हमारे कायनात का भी है। समय अधिक नहीं इसलिए लम्बी बात नहीं करनी है। मुख्य उद्देश्य ये है कि हमारे अन्दर आत्म सुधार की भावना अकुरित हो जाए और जो हमारे अन्दर बीमारी हो गई है उसमें सुधार हो जाए। आजकल तो खासतौर पर जो तनिक धार्मिक प्रवृत्ति के हो जाते है वह तुरन्त सुधारक बनने की चेष्टा करने लगते हैं। अपने सुधार की चिन्ता तो करते नही। बस सब ये चाहते हैं कि हम समाज सुधारक कहलाएं। माशाअल्लाह उन्होंने इतने लोगों को निकाला, उन्होंने ये किया, उन्होंने वह किया। किसी के कारण कुछ भी नहीं हुआ, जो कुछ हुआ सब ऊपर वाले की मर्जी से हुआ। एक तो ये बात सीधी सी है कि हमारे आपके करने से होना कुछ भी नहीं है। अल्लाह ने इतना कहा है कि तुम कोशिश करो और ये बात हर जगह लागू है।

एक उदाहरण देता हुँ और उसके बाद बात ख़त्म कर दूँगा वह ये है कि गेहूँ है, खेत में पैदा होता है, आपने गेहूँ मिट्टी में डाल दिया और पैदावार हो या न हो अल्लाह के हाथ में है। चलिये गेहूँ की बाली लग गई और अब उसके बाद बच पाये या न बच पाए फिर अल्लाह का मुआमला है। उसके बाद चलिये वहाँ से भी बच गया, बच कर पिस कर आ गया और आपके घर में पक गया और आपने ग्रास (लुक्मा) उठाया और मुँह में डाल दिया और मुँह के अन्दर चला गया, अब कन्ठ में फंसे या न फंसे, ये अल्लाह के हाथ में है और फिर पेट में जाकर अटके या न अटके फिर मुआमला अल्लाह के हाथ में है। आरम्भ से अंत तक देखते जाइये रिमोट उसी के हाथ में है। इसलिए जो निगाह ऊपर कर लेता है उसके सारे मसले हल हो जाते हैं। उसको कुर्आन में कहा गया है कि जो हटा लेता है निगाह वहां से, हम उसे संकट में डाल देते हैं, कैसे? "जो अल्लाह को भूल जाता है अल्लाह उसको भुला देता है, जो अल्लाह को भूल जाता है अल्लाह उसे स्वयं विस्मृत कर देता है।" अर्थात जब ऊपर से नज़र हटती है तो अपने ऊपर से भी नजर हट जाती है। यदि ऊपर ऑखें लगी रहती हैं तो अपने ऊपर निगाह रहती है। इसलिए कहा गया है जो अपने को पहचानता है वह खुदा को भी पहचानता है। "अल्लाह को पहचानता है तो अपने को भी पहचानता है" जब अल्लाह को भूल जाएगा तो स्पष्ट है रब कहेगा कि तुम अपने को भूल जाओ जैसे कोल्हू का बैल बन जाता है, वह कमाता है कि सुख प्राप्त करे लेकिन कमाना असल रह जाता है सुख नहीं मिलता।

समस्त जीवन उठाकर देखिये न घर में सूकून न बाहर आराम। इसलिए कि हमने पैसा कमाया दूसरी नियत से, पत्नी रखी दूसरी नियत से, ऊपर से जब नज़र हट गई है तो मुआमला बिगड गया। इसलिए अच्छी पत्नी कब आती? कुर्आन में है न कि "तुम जब अल्लाह के नाम पर लाओ तो अल्लाह को भूलो नही, जब अल्लाह को भूलोगे नहीं तो हमारी पत्नी सुशील पत्नी होगी और जब अल्लाह को भूल कर लाओगे व गलत ढूँढ लाओगे तो अर्थात पैसे या सुन्दरता के कारण से, तो स्पष्ट है कि गड़बड़ होगी। दीन धर्म के कारण से लाते तो गड़बड नही होती। हदीस से पता चलता है कि यदि धार्मिक कारणों से लाए तो मजे रहेंगे। धार्मिक प्रवृत्ति की महिला को वरीयता दोगे तो मजे रहेगें। केवल बात ये है कि जब दृष्टि हमारी ऊपर होगी तो सारे मसले हल हो जाएगें। यदि हमारी दृष्टि केवल हम पर होगी तो हम स्वार्थी होंगे, स्वार्थ के नतीजे में जो परेशानियाँ हैं वह सारी की सारी आ जाएगी। अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखाए। हमारे अन्दर सुधार पैदा करे, पहले हमे नेक बना दे और अपने काम के लिए, अपने दीन–धर्म के लिए हमे स्वीकार कर ले।

□□□□

किस्त–6

इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से

– अल्लामा सै० सुलेमान नदवी (रह०)

संकलन– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

खुदा का कुर्आन द्वारा इस्लाम फैलाने का आदेश

पवित्र कुर्आन इस्लाम के दावा और दलील दोनों का संग्रह है और यही उसके धर्म का पवित्र ग्रन्थ है। स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और दूसरे प्रचारक सहाबा (रजि०) भी अपने उपदेशों में केवल कुर्आन पढ़कर सुनाते और जहाँ कहीं भी उनको इसका अवसर मिल जाता वहाँ उसका प्रभाव अपना काम कर जाता था। इसका आदेश स्वयं कुर्आन ने दिया है किन्तु इस जिहाद का हथियार लोहे की तलवार नहीं बल्कि कुर्आन की तलवार थी जिसके वार की रोक–थाम ढ़ाल से सम्भव न थी। अल्लाह ने अपने सन्देष्टा (रसूल) को उसी तलवार से जिहाद करने का आदेश दिया ''तो ऐ सन्देष्टा! इन्कारियों का कहा न मान और इस कुर्आन से उनके साथ बड़े ज़ोर से जिहाद कर'' (सूरः फुरकान–5)। इस ईश्वरीय सन्देश (कलामे इलाही) का धरती पर उतरने का कारण यही था कि वह अल्लाह के भटके हुए बन्दों को उनका वादा याद दिलाए ''तो ऐ सन्देष्टा! उनको जो मेरी धमकी से डरते हैं कुर्आन के माध्यम से याद दिलाओ''

(सूरः काफ़–3)।

इस्लाम के प्रसार का प्राकृतिक क्रम

अरब में केवल तीन समुदाय थे जिनका इस्लाम लाना मानो समस्त महाद्वीप का इस्लाम लाना था, अर्थात बहुदेववादी, यहूदी और इसाई। अरब अनेकश्वरवादियों का मुख्यालाय काबा था उनके मजहबी पेशवा कुरैश थे। यहूदियों का गढ़ मदीना और ख़ैबर था। यहूदी और अग्नि उपासक (मजूसी) शाम (सीरिया) और यमन के आस–पास क्षेत्रों में फैले हुए थे। इस आधार की दृष्टि से इस्लाम के प्रसार का प्राकृतिक क्रम ये होता कि कुरैश और बहुदेवादियों को पहले एकेश्वरवाद का निमंत्रण दिया जाए, फिर यहूद को इस्लाम का आज्ञाकारी बनाया जाए, उसके बाद इसाई और अग्नि उपासकों को निमंत्रण दिया जाए। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इसी क्रमानुसार प्रचार–प्रसार किया।

क़बीलों का इस्लाम लाना

कबीलः मुज़ैना – ये एक बहुत बड़ा कबीलः था जिसका वंश मिस्र तक पहुँचकर कुरैश के ख़ानदान से मिल जाता था। नोमान बिन मुकरन (रजि०) मशहूर सहाबी जो मक्का विजय के समय कबीलः मुजैना के ध्वजावाहक थे इसी कबीले के थे। 5 हिज़री में इस कबीले के चार सौ लोग कबीले के दूत बनकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और इस्लाम धर्म स्वीकार किया।

कबीलः दौस – दौस अरब का एक मशहूर कबीलः था। इस कबीले के प्रसिद्ध कवि और सरदार तुफैल बिन अम्र (रज़ि०) थे। वह देश त्याग (हिज़रत) से पहले मक्का गए। कुरैश ने उनको रोका कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के पास न जाएँ कि संयोग से एक बार हरम में गए तो पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे। कुर्आन सुनकर प्रभावित हुए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहिवसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थना की कि आप मुझको इस्लाम की वास्तविकता बतलाएँ। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इस्लाम की शिक्षा दी और कुर्आन की आयतें सुनाईं। वह अति शुद्ध हृदयता से इस्लाम ले आये। वतन जाकर लोगों को इस्लाम का निमंत्रण दिया, किन्तु उनके क़बीले में व्यभिचार का अत्यधिक चलन था। लोग समझे कि इस्लाम लाने के बाद इस अंधी आज़ादी से हाथ धो बैठेंगे। हज़रत तुफ़ैल (रज़ि0) ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के सामने दुखड़ा सुनाया। आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने दुआ फ़रमायी कि "ऐ ख़ुदाः दौस को पथ प्रदर्शन (हिदायत) दे।" फिर तुफ़ैल (रज़ि0) से कहा कि वहाँ जाकर नम्रता से लोगों को इस्लाम का निमंत्रण दो। अतः लोगों ने उनकी प्रेरणा से इस्लाम धर्म स्वीकार किया और अस्सी ख़ानदान के सभी लोग देश त्याग कर मदीना चले आये, जिसमें प्रसिद्ध अबू हुरैरः (रज़ि0) भी थे। (असाहब जादुल्मआद और इब्ने सऊद जुज़ व वफ़ूद)।

क़बीलः बनू हारिस बिन कअब—

यह नज़रान का अति सम्मानित ख़ानदान था। हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) को उनके पास इस्लाम के प्रचार—प्रसार हेतु भेजा गया। ये लोग उनके निमंत्रण पर अति शुद्ध हृदयता से इस्लाम लाये। वह अधिकतर युद्ध में अरबी क़बीलों पर भारी पड़ते थे। आप (सल्ल0) ने पूछा कि तुम्हारे प्रभुत्व के क्या कारण थे। बोले हम सदैव एकजुट होकर लड़ते और अत्याचार नहीं करते थे। (असाबह व जादुल्मआद)।

क़बीलः ग़ेफ़ार — हज़रत अबूज़र (रज़ि0) जिनका वर्णन पहले हो चुका मक्का से जब वापस लौटे और अपने क़बीले को इस्लाम का निमंत्रण दिया तो आधा क़बीला उसी समय मुसलमान हो गया। शेष ने कहा कि हम उस समय इस्लाम स्वीकार करेंगे, जब आप (सल्ल0) मदीना आ जायें। अतः आप (सल्ल0) मदीना आये तो शेष आधा क़बीलः भी मुसलमान हो गया।

क़बीलः औस व ख़ज़रज — हज के मौसम में अरब के अधिकतर क़बीलों का जमावड़ा होता था। आप (सल्ल0) इस अवसर पर प्रत्येक क़बीले के निवास स्थल पर जाते और इस्लाम का निमंत्रण देते। अतः मदीना के औस व ख़ज़रज क़बीले के अधिकतर समूह ने उसी अवधि में इस्लाम स्वीकार किया।

क़बीलः जुहैनः — क़बीलः जुहैनः भी इन्हीं क़बीलों के आस—पास स्थित है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने उन्हें इस्लाम का निमंत्रण दिया तो तुरन्त एक हज़ार का समूह लेकर मदीना आये और मुसलमान हो गये।

यमन में इस्लाम का विस्तार

अरब देश में यमन समस्त राज्यों में अत्याधिक प्राचीन व व्यापारिक मुख्यालय रहा है। सबा और हमीर का भव्य शासन यहीं स्थापित था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के जन्म से लगभग पचास वर्ष पूर्व 525 ई0 में इथोपियाई (हब्शी) ईसाइयों ने यमन पर अधिकार जमा लिया था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के जन्म से कुछ वर्ष के पश्चात ही ईरानी यहाँ के मालिक बन बैठे। यमन में इस्लाम की किरणें बहुत पहले पहुँच चुकी थीं। दौस क़बीलः यमन निवासी था, जो मुसलमान बन गया। यमन का एक अन्य मशहूर क़बीलः अश्अर था, जो हब्शा (इथोपिया) जाने वाले देश त्यागियों से दीक्षा प्राप्त करके मुसलमान बना।

क़बीलः हम्दान – हम्दान यमन का सबसे बड़ा और रसूख़दार ख़ानदान था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने उनके बीच धार्मिक प्रचार–प्रसार के लिए हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) को भेजा। हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) छः महीने तक उनको इस्लाम का निमंत्रण देते रहे किन्तु उन लोगों ने स्वीकार न किया। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) को बुलाया और हज़रत अली (रज़ि0) को भेजा। हज़रत अली (रज़ि0) ने उन लोगों को इक्ट्ठा करके हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का पवित्र पत्र पढ़ कर सुनाया, जिसके प्रभाव से सम्पूर्ण क़बीलः मुसलमान हो गया। (जरक़ानी बसनद सहीह अज बैहकी)।

नज्रान वासियों का इस्लाम लाना

यमन के पास ही नज्रान है। नज्रान अरब में ईसाईयों का महत्वपूर्ण मुख्यालय था। ईसाईयों के अतिरिक्त नज्रान में नास्तिकों (इन्कारियों) की भी कुछ आबादी थी, उनमें एक क़बीलः बनू हारिस इब्ने जियाद था, जो मदआन नामक बुत (मूर्ति) का उपासक था इसलिए अब्दुल मदआन के नाम से प्रसिद्ध था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि0) को इस्लाम के प्रचार–प्रसार हेतु भेजा। हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) वहाँ पहुँचे तो समस्त क़बीलः मुसलमान हो गया।

आम यमन में धार्मिक प्रचार–प्रसार के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि0) और अबू मूसा अश्अरी (रज़ि0) को यमन के एक–एक ज़िले में भेजा। चलते समय आप (सल्ल0) ने उन लोगों को जिन बातों की शिक्षा दी वह वास्तव में इस्लामी प्रचार–प्रसार के सिद्धान्त हैं (और उन आक्षेपों का उत्तर है, जो इस्लाम पर लगाये जाते हैं)[1]। आप (सल्ल0) ने कहा "सरलता से कार्य करना, कठोर न बनना, लोगों को शुभ समाचार सुनाना, तुम दोनों वहाँ मिलकर काम करना, तुमको वहाँ ऐसे लोग मिलेंगे, जो पहले से किसी को मानने वाले हैं, जब उनके यहाँ पहुँचना तो पहले एकेश्वरवाद (तौहीद) और ईशदौत्य (रिसालत) का निमंत्रण देना, जब वह उसे स्वीकार लें तो कहना कि अल्लाह ने तुम पर दिन–रात में पाँच वक़्त की नमाज अनिवार्य की है, जब यह भी मान लें तो उनको समझाना कि तुम पर ज़कात (धर्मादाय) भी अनिवार्य है, तुममे से जो धनी हों उनसे लेकर, जो निर्धन हैं, उनको दे दी जायेगी, देखो! जब वह ज़कात देना स्वीकार कर लें तो चुनकर अच्छी–अच्छी चीज़े न ले लेना। पीडितों के श्राप (बददुआ) से डरते रहना कि उसके और अल्लाह के मध्य कोई पर्दा बाधक नही है। हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 ने पूछा कि ऐ नबी (सन्देष्टा)! हमारे मुल्क यमन में जौ और शहद की शराब बनती है, यह भी हराम है? आपने कहा, हर चीज़ जो नशा पैदा करे हराम (वर्जित) है।

(इज़ाफता बहरीन)

जारी.......

1 संकलन कर्ता

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें तथा स्पष्ट और सरल लिखें।

धन्यवाद!

सभी पाठकों से अनुरोध है कि नये पाठक बनाने में हमें सहयोग दें। सवाब पायेंगे।

सम्पादक!

समाज सुधार क्यों और कैसे?

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुसलमानों को अपने दीन पर अमल करना और अपने पारिवारिक मामलों को इस्लामी शरीअत के आदेशों के अनुसार निबटाना कितना ज़रूरी है, इसको कुर्आन और हदीस की शिक्षाओं से भली प्रकार समझा जा सकता है। मुसलमानों की शरीअत उन के जीवन के तमाम पहलुओं में मार्गदर्शन करती हैं। उनके जीवन की कठिनाईयों का हल बताती है। इन ज़रूरतों का हल बताने वाली शरीअत से मुँह फेरना न केवल यह कि बड़ा दुर्भाग्य है बल्कि खुदा को सख़्त नाराज़ करने वाली बात है। इस से अल्लाह की रहमत दूर होती है, अल्लाह को दीन व शरीअत की खिलाफ़वर्ज़ी बिल्कुल कबूल नहीं **तर्जमः** "और जो व्यक्ति इस्लाम के अलावा किसी और दीन का तालिब (इच्छुक) होगा, वह उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा, और ऐसा *व्यक्ति* आख़िरत में नुकसान उठाने वालों में होगा।" (कुर्आन 3–85)

"क्या यह जाहिलियत के युग के हुक्म के इच्छुक हैं? और जो यकीन रखते हैं, उनके लिए खुदा से अच्छा हुक्म किसका है?" (कुर्आन 5–50)

अल्लाह ने अपना यह दीन और शरीअत अपने अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्ल0) के ज़रिये मुसलमानों को अता कर दिया, और अपने इस अन्तिम नबी के आदेशों और फैसलों को मानना ज़रूरी करार दिया, और फ़रमाया कि इसके माने बिना कोई मुसलमान, मुसलमान नहीं रहता। **तर्जमः** "तुम्हारे परवरदिगार की कसम यह लोग जब तक अपने विवादों में तुम्हें मुँसिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उससे अपने दिल में तँग न हों बल्कि उसको ख़ुशी से मान लें, तब तक मोमिन नहीं होंगे।" (कुर्आन 4–65)

लेकिन बड़े दुख़ की बात है कि मुसलमानों में अपनी शरीअत के अनुसार जीवन यापन करने में बड़ी असावधानी पैदा हो गयी है। उसके आदेशों के अनुपालन के बजाय दूसरों के रीति–रिवाज पर अमल किया जाने लगा है, जो कि एक तरफ खुदा और उसके रसूल की नाफ़रमानी और उनकी नाराज़गी का कारण है दूसरी तरफ मुसलमानों का बहैसियत मुसलमान साबित होना मुश्किल हो गया है। वह अपने दीन इस्लाम के तौर तरीका को न अपनाने वाले और गैरों की रस्मों को अपनी चाल–ढाल बनाने वाले बनते जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति कुछ तो असावधानी और मनमानी के कारण हुई और कुछ अपनी शरीअत से अनभिज्ञता के कारण। गफ़लत और मनमानी को दूर करने के लिए प्रवचन और नसीहत की ज़रूरत है और अनभिज्ञता का इलाज उनको शरीअत के ज़रूरी अहकाम से वाकिफ करा के किया जा सकता है। इसलिए इस मुल्क में जहाँ का संविधान सेकुलरिज़्म पर आधारित है, और मुसलमान अल्प संख्या में भी हैं, इसलिए हुकूमत से आशा नहीं की जा सकती। इसको मिल्लत के सपूत ही अंजाम दे सकते हैं। क्योंकि अपनी मिल्लत को मज़बूत और महफ़ूज़ रखने की ज़िम्मेदारी उन्हीं की है। इस्लामी शरीअत के सिलसिले के मामलों का देश के संविधान बनाने वाले संस्थानों से जो सम्बन्ध है, उसके लिए अल्हमदुलिल्लाह हुकूमत के सामने बचाव पक्ष रखाने और ग़लतफ़हमियाँ दूर करने के प्रयास मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के ज़िम्मेदारों ने अंजाम दी है और

शेष पृष्ठ..... 26 पर

मुस्लिम समाज की चिन्ता

–मौलाना सैय्यद मुहम्मद सानी हसनी

अगर किसी मोहल्ले में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो खुद अपने घर को आग लगा दे और फिर अपने घर को जलता देखकर खुश हो या अपने हाथों से अपने घर की दरो–दीवारों को गिरा दे और ऐसे मौके पर लोगों को एकत्र करे और उनको यह तमाशा दिखाये तो दूसरे लोग ऐसे व्यक्ति को क्या कहेंगे? सब यही समझेंगे कि ऐसा व्यक्ति जो इस तरह की हरकत करे उसके दिमाग़ में कुछ फ़ितूर है, उसका दिमाग़ ठीक नहीं है वरना वो खुद अपने ही हाथ से अपने घर को न जलाता और उसकी दरों–दीवारों को न गिराता।

लेकिन आज हमारे समाज में इस प्रकार के बहुत से वाक़ये होते हैं और न केवल ये कि घर जलता हो या दरो–दीवार गिरते हों बल्कि घरों की तबाही के साथ–साथ इज़्ज़त व शराफ़त को भी बट्टा लगता है। ग़ैरत का ख़ात्मा होता है। ज़िल्लत व रुसवाई का न हटने वाला दाग़ लगता है। और आख़ीर में उसका वजूद ही ख़त्म हो जाता है।

आपके दिल में ये सवाल पैदा हो रहा है कि आखिर वो कौन सा नासूर है जो जिस्म घुला देता है, वो वाक़ये क्या हैं, जो घरानों को मौत की गोद में सुला देते हैं।

हमने इस्लाम के दामन को छोड़कर उसके साये से निकलकर रस्मो–रिवाज के जाल में फंसकर अपनी अक्ल व ज़मीर को भी अलविदा कह दिया, जिसका नतीजा ये हुआ कि सारी ज़िन्दगी रस्मो–रिवाज, नुमाइश नाम होने और एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश में उलझकर रह गये। हम इस वक़्त ज़िन्दगी के सारे ख़ुशी व ग़म के मौक़ों पर बहस नहीं कर रहे हैं बल्कि मिसाल के तौर पर केवल शादी के बारे में बात करेंगे।

आज हमारे घरानों में शादी किस तरह होती है, इसके लिए तरह–तरह के इन्तिज़ाम होते हैं, महर व जहेज़ के लिए क्या–क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं और हज़ारों रस्मों से गुज़रना पड़ता है, शादी एक ख़ुशी की चीज़ होती है और ज़िन्दगी में सबसे ज़्यादा ख़ुशी उसी वक़्त होती है लेकिन आज के दौर में यही मौक़ा ऐसा होता है, जिससे भयानक तबाही शुरू होती है और थोड़े से समय को ख़ुशी वाला बनाने के लिए और लोगों में ख्याति बटोरने के लिए सारी ज़िन्दगी परेशान कर दी जाती है। अगर कम से कम मुस्लिम घरानों की शादियों का जाएज़ा लीजिए तो आपको!

1–कितने ऐसे मिलेंगे जो शादी पर हज़ारों रूपये खर्च करते हैं, जबकि खुद परेशान हाल होते हैं मगर कर्ज़ लेकर फ़िज़ूल की रस्मों में पैसा पानी की तरह खर्च करते हैं।

2–कितने ऐसे मिलेंगे जो अपने मकानों तक को गिरवीं रख कर कर्ज़ लेते हैं और फिर वो मकान को छुड़ा भी नहीं पाते हैं।

3–कितने ऐसे मिलेंगे जो सूद का रूपया लेकर शादी करते हैं और सूद पर सूद चढ़ता रहता है।

4–और कितने ऐसे मिलेंगे जो रूपया इकट्ठा न कर सकने की वजह से अपनी जवान लड़कियों की शादी नहीं कर पाते और सारी उम्र उनको बिठाए रखते हैं।

और कई इसी शर्म व गै़रत की वजह से आत्महत्या कर लेते हैं। लेकिन किसी में हिम्मत नहीं होती कि वो समाज पर रोक लगाए और उस मुसीबत से बचाए। लेकिन इस दुनिया में ऐसे बेखुद इन्सानों की कमी नहीं जो उस जैसे इबरतनाक वाक़ये के बाद भी खुदा की तरफ नहीं आते बल्कि जुरअत व बेबाकी में और आगे हो जाते हैं और वो दुनिया पर सुस्ती व ऐश व मस्ती में डूब जाते हैं और उनकी जुबान और अधिक बहक जाती है। मिस्र के उस वाक़ये के बाद जब उलमा और दीनी हल्कों ने जहाज़ के डूबने की वजह ग़फ़लत व ऐश व मस्ती को क़रार दिया जो मिस्र के एक साहित्यकार युसुफ अस्बाई ने उसका जवाब दिया और अपने जवाब में जिस ढिठाई और खुदा फ़रामोशी का सुबूत दिया वो हर दीनदार और आख़िरत पर यकीन रखने वाले को चौंका देने वाला है इसके कई कॉलमों का खुलासा नीचे दिया जा रहा है।

"कुछ लोग कहते हैं कि जहाज़ इसलिए डूबा कि उसके निगराँ ने बेतरतीब आदमियों को अन्दर जाने दिया और जहाज़ इस बोझ को बर्दाश्त न कर सका, कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो उसके डूबने की वजह नाच गाने व सुरूर को बताते हैं और कहते हैं कि खुदा का अज़ाब नाज़िल हुआ ऐसे लोग ऐश व इशरत को रोकना चाहते हैं कि हम खुशी व मर्सरत से तौबा कर लें और मुँह बिसोर कर ज़िन्दगी गुज़ारें और तफ़रीह से कोई मतलब न रखें और अपनी हालत पर संतुष्ट होकर मुर्दा ज़िन्दगी गुज़ारें ऐसा नहीं हो सकता। हम ऐश व खुशी को अलविदा नहीं कह सकते हम मुर्दा वाली ज़िन्दगी नहीं अपना सकते। हमें खुश रहने का हक़ है। हमको तफ़रीह करने और मस्त रहने का हक़ है। हमको उसकी कोई परवाह नहीं कि जहाज़ डूब गया। हम इस तबाही के कारण जो डेढ़ सौ आदमियों की मौत से आयी है ऐश व मस्ती से तौबा नहीं कर सकते और उस खुशी से भरी ज़िन्दगी से बाज़ नहीं आ सकते, अगर जहाज़ डूबा है तो डूबा करे। हम दूसरा जहाज़ नील में डाल देंगे, वो डूब जाएगा तो तीसरा जहाज़ उतार देंगे, कहाँ तक डूबेगा।

हम नाचने गाने वाली टोलियाँ सवार करेंगे ऐश व खुशी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, एक टोली की हक़ीक़त क्या ऐसी सौ टोलियाँ उतारेंगे किसी को कोई हक़ नहीं कि वो हमको उन कामों से रोके और उन से डराए और ऐश व खुशी से रोके और हमारी खुशी हमसे छीने और कै़द व बन्द की ज़िन्दगी गुज़ारने के बारे में कहे और ख़ामोश व बेजान ज़िन्दगी गुज़ारने के बारे में कहे। हर चीज़ अल्लाह पर नही छोड़ी जा सकती। हम आज़ाद हैं और आज़ाद रहकर ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं।

आपने देखा कि किस बेदीनी और घमण्ड का प्रदर्शन इसमें किया गया हैं किस ढ़िटाई का सुबूत दिया गया है ऐसे लोगों की इन्ही हरकतों से अगर खुदा का अज़ाब न नाज़िल हो तो क्या हो?

गुज़री हुई क़ौमों पर जो अज़ाब नाज़िल हुए हैं, अगर उनके कारणों का गहन अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि उनकी जुर्रत और बेबाकी और ख़ुदा फ़रामोशी, बेहयाई और ऐश और मस्ती के कारण अज़ाब आया और क़ौमों की क़ौमें मिटा दी गयीं। उनकी चर्चाएं केवल ज़बान पर व किताबों में रह गईं ताकि लोग सबक़ हासिल करें।

□□□□

एक मुलाकात

नवमुस्लिम विद्वान "मुरादहोफ़मैन" से

—जाफर मसऊद हसनी नदवी

आइये आज आपकी मुलाकात कराते हैं एक जर्मनी के रहने वाले नवमुस्लिम विद्वान "मुरादहोफमैन" से, मुरादहोफ़मैन एक राजनीतिज्ञ थे और पूरे 33 साल इस महत्वपूर्ण व नाजुक पेशे से जुड़े रहे, वो नाटो (NATO) के मीडिया सलाहकार रहे, रिबात (मोरस्को) में कई साल जर्मन के ऐम्बेजडर रहे, उन्होंने गहरा और विस्तार पूर्वक अध्ययन, जीवन के लम्बे अनुभव और एक जीवन शैली की हैसियत से इस्लाम और दूसरे धर्मों के बीच तुलनात्मक अध्ययन का एक लम्बा सफर तय करके इस्लाम को स्वीकार किया।

सन् 1980 ई0 में इस्लाम स्वीकार करके "मुरादहोफ़मैन" ने अपनी राजनीतिज्ञ जीवन से नाता तोड़ लिया और इस्लाम की दावत व तब्लीग के लिए अपने आपको वक्फ कर दिया। अब उनकी जिन्दगी का केवल एक ही मकसद था, और वो ये कि इस्लाम की उस तस्वीर को सही किया जाए जो मीडिया, फिल्म, और साहित्य के द्वारा लगातार बिगाड़ी जा रही है, और उसके पुरकशिश चेहरे, दिलकश नक्शे और दिलफरेब चेहरे पर आड़े–तिरछे ब्रश चलाकर उसको कुछ इस तरह बदनुमा बल्कि डरावना बनाने की कोशिश की जा रही है कि अच्छा भला आदमी भी अब उससे डरने लगा है।

संतुलित चिन्ता करने वाले, दसियों किताबों के लेखक, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े "मुरादहोफमैन" के जीवन का हर क्षण इस सोच व फिक्र में गुज़रने लगा कि किस तरह इस्लाम को उसकी अस्ल शक्ल में पेश किया जाए, और किस तरह उस पर लगाए गये धब्बों को मिटाया जाए, और किस प्रकार हक की तलाश में लगी इस दुनिया को ये समझाया जाए कि हक व सच्चाई केवल इस्लाम में है, किस तरह उलझनें परेशानियों और मायूसियों की अन्धेरी गलियों में भटके हुए इन्सानों को ये बताया जाए कि हर मसले का हल केवल इस्लामी शिक्षा में है। मुरादहोफ़मैन की इन्हीं सेवाओं को सराहते हुए उनको 2009 ई0 की मुमताज इस्लामी व्यक्ति घोषित करके दुबई इन्टरनेशनल एवार्ड से सम्मानित किया गया।

हाल ही में एक अरबी पत्रिका "अलवायिल इस्लाम" के प्रतिनिधि ने मुरादहोफमैन से एक इन्टरव्यू लिया, इन्टरव्यू में मुरादहोफमैन ने जिन ख्यालों को प्रकट किया, जो मशवरे दिये, जिन कमजोरियों की निशानदेही की और जिन बीमारियों के बारे में बताया और उनके लिए जो उपाय बताए वो हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए भी अमृत का स्थान रखते हैं, और यही वजह है कि मेरे दिल में मुरादहोफ़मैन से आप को मिलवाने का ख्याल पैदा हुआ।

आइये अब देखें कि मुरादहोफमैन हालात को किस नज़र से देखते हैं और वर्तमान स्थिति में मुसलमानों को क्या मशवरे देते हैं वो कहते हैं कि ये सच है कि जिन देशों में मुसलमान अल्पसंख्यक है, उन देशों में जिस धर्म को सबसे ज्यादा गलत अन्दाज़ से पेश किया जा रहा है वो इस्लाम है, यहाँ तक कि अब स्थिति कुछ इस प्रकार की हो गई कि युरोप में रहने वाला इन्सान इस्लाम से डरने लगा है। इसका कारण जहाँ पश्चिमी मीडिया का गलत प्रोपेगन्डा है वहीं हम मुसलमानों का गलत रवैया भी इसका एक आधारभूत कारण है। अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि इस्लामी दुनिया का कोई भी मुल्क युरोप के सामने इस्लाम को एक आडियल के रूप में नहीं पेश कर पा रहा है। अधिक

अफसोस की बात ये है कि पूरी गैर इस्लामी दुनिया में मुसलमानों की एक भी आर्गनाइजेशन ऐसी नहीं है जो अपने कार्यो से मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती और न ही मुसलमानों का उन देशों में कोई ऐसा एक प्लेटफार्म है जिसकी आवाज़ समझी जाती हो, यहाँ जो मुसलमान आर्गनाईजेशन हैं न उनके विचारों में सहमति है और न ही उनके कार्यो में एकता, सबकी बोलियाँ अलग–अलग और सब की माँगे जुदा–जुदा, नतीजा ये निकलता है कि सरकार उनकी माँगों को कोई अहमियत नहीं देती।

हैरत की बात ये है कि जर्मनी जैसे देश में भी क्षेत्रीय बंटवारे के प्रभाव नुमायाँ तौर पर महसूस किये जा सकते हैं, और यहाँ की मस्जिदों की निस्बत बजाए इस्लाम की ओर किये जाने के उन क्षेत्रों की ओर की जाती है जहाँ के लोग उस मस्जिद के करीब व आस–पास आबाद होते हैं। मिसाल के तौर पर हैम्बर्ग में ग्यारह मस्जिदें हैं, और हर मस्जिद का नाम इलाके के नाम पर रखा गया है जहाँ के लोग उस मस्जिद के आस–पास रहते हैं, जैसे पाकिस्तानी मस्जिद, हिन्दुस्तानी मस्जिद, बोस्नियाई मस्जिद, तुर्की मस्जिद, अफगानी मस्जिद, अफ्रीकी मस्जिद। क्षेत्रों की ओर मस्जिदों का ये सम्बन्ध नमाज पढने वालों में एक पक्षपात उत्पन्न करता है और मुस्लिम उम्मत का अन्तर्राष्ट्रीय तसव्वुर उनके दिमाग से जाता रहता है।

(हिन्दुस्तान की स्थिति कुछ और खतरनाक है यहाँ मुसलमानों में क्षेत्रीय तो नहीं लेकिन मसलक और बिरादरी के आधार पर शिद्दत अपनाई जा रही है, और कई शहरों में हालात इतने बिगड़ चुकें है कि दूसरे मसलक या दूसरी बिरादरी का कोई आदमी दूसरे मसलक या बिरादरी की मस्जिद में नमाज नहीं पढ सकता।)

मुरादहोफमैन मुसलमानों से कहते हैं:

युरोप में आबाद मुसलमानों को एक बात समझना चाहिए कि युरोप अभी तक सलीबी जंगों के प्रभाव से आजाद नहीं हो सका है और मुसलमानों के बारे में कैथोलिक चर्चो का नकारात्मक रवैया अभी तक बरकरार है, पश्चिमी मीडिया का मुसलमानों के खिलाफ जहर उगलने का सिलसिला उसी तरह जारी है, और इस्लामी सभ्यता के पश्चिमी सभ्यता पर गालिब आ जाने का खौफ पश्चिमी बाशिन्दों की नींद उडाए हुए है, और युरोप में मुसलमानों की बढती हुई आबादी ने उनको और अधिक चिन्ता में डाल दिया है।

ऐसी सूरत में हमारी जिम्मेदारी ये होती है कि हम स्थानीय लोगों के खौफ़ और अन्देशों को दूर करने की कोशिश करें और अपने तर्जे अमल से साबित करें कि हमारा वजूद और हमारी तहजीब उनके लिए और उनके देश के लिए और उनकी आने वाली नस्लों के लिए अपने अन्दर केवल अच्छाइयाँ ही अच्छाइयाँ रखती है। और इसके लिए हमको अखबार, रेडियो, इन्टरनेट और दूसरे सभी प्रचार व प्रसार माध्यमों का भरपूर प्रयोग करना चाहिए।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों का सैकड़ों साल शासन करना, स्वतन्त्रता संग्राम में उनका भरपूर योगदान देना, अपनी बहादुरी, दिलेरी और जाँबाज़ी का हैरान कर देने वाला प्रदर्शन करना और फिर देश के बंटवारे और कुछ परिणाम से अनभिज्ञ लोगों के हाथों एक अलग मुस्लिम देश की स्थापना होना, ये वो मामले जो यहाँ के अल्पसंख्यकों को हमेशा शंका में घेरे रहते हैं। और मुसलमानों को खुशहाल, ताकतवर और एक देख कर उनकी आँखों में खौफ़ का साया मंडलाने लगता है। और यही वो भय व शंका है, जिसने इस देश के अल्पसंख्यक वर्ग को बहुसंख्यक वर्ग के विरूद्ध युद्ध पर मजबूर कर रखा है। आवश्यकता इस भय व शंका को दूर करने, उनके दिलों में इत्मिनान

पैदा करने और अपना महत्व, आवश्यकता और लाभ से उनको परिचित कराने की है, अगर हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो प्रचार व प्रसार के परिणाम और अधिक बेहतर निकल सकते हैं।

मुरादहौफ़मैन का कहना है:

इस समय दुनिया में कोई धर्म, कोई फ़लसफ़ा और किसी सभ्यता के दृष्टिकोण व संस्कृति में अपने मानने वालों का कोई मार्गदर्शन नहीं करता, इस्लाम के अतिरिक्त जो धर्म अपनी सभ्यता का अस्तित्व रखते भी हैं तो उनकी सभ्यता इस दुनिया के फ़ैशन की भेंट चढ़ चुकी है। केवल इस्लाम इस समय ऐसा धर्म है जिसकी अपनी सभ्यता है, अपना स्वयं का जीवन बिताने का तरीक़ा है, रहन–सहन के अपने तरीक़े हैं, और लेन–देन के अपने कुछ उसूल व नियम हैं, और ये सभ्यता अपने आप में स्वयं का जीवन और एक दअवत है, इसके अन्दर एक कशिश और एक जादू है, जहाँ भी उसका प्रदर्शन होगा लोग उसी की ओर खिचेंगे, एक भीड़ उसके चारों ओर इकट्ठा होगी और उसको अपनाने की ओर माएल होगी, इसलिए इस समय सबसे अधिक जिन चीज़ों के विरूद्ध मुहिम छिड़ी हुई है उनमें से एक परदा है, दाढ़ी है, सतर को ढकने वाला लिबास है, क्योंकि ये वो चीज़ें हैं जो अवामी जंगों में लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं, जैसे कालेज और युनिवर्सिटी में, सड़कों और दफ़्तरों में, पार्कों और तफ़रीह गाहों में, बसों और ट्रेनों में, ये चीज़ें न केवल ये कि लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं बल्कि उनके अन्दर ये जानने की इच्छा पैदा करती हैं कि इस्लाम क्या है। ऐसी स्थिति में हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम अपनी सभ्यता व संस्कृति को दांतो से दबाए रहें क्योंकि इस मसले में ज़रा सी भी कोताही हमें न केवल ये कि अपने धर्म से दूर कर देगी बल्कि फ़ैशन की ये दुनिया हमको इस प्रकार निगल लेगी जिस प्रकार उसने दूसरी क़ौमों को निगल लिया।

मुरादहोफ़मैन कहते हैं :

खुशी की बात ये है कि इस समय चहुँओर इस्लाम फैल रहा है। लेकिन अगर इस ओर थोड़ा सा और ध्यान दिया जाए और अपनी कुछ कमियाँ दूर कर ली जाएं तो शायद इस्लाम स्वीकार करने वालों की संख्या कई गुना बढ़ जाए, मसलन ऐसे दअवत देने वाले तैयार किये जाएं जो अपने सामने वाले के स्वभाव, इच्छा और उसके स्तर का पूरा ख़्याल रखते हों प्रत्यक्ष रूप से दअवत देने के तरीक़े से बचते हुए ऐसा तरीक़ा अपनाएं जो उनके सामने वाले को सोचने पर मजबूर कर सके, जैसे जो व्यक्ति खुदा को नही मानता, रसूल सल्ल0 पर ईमान नही रखता, क़ुर्आन करीम को आसमानी किताब नहीं समझता, उससे अगर आप ये कहें कि खुदा ये कहता है, क़ुर्आन करीम में ये आता है, हुज़ूर पाक सल्ल0 का ये इरशाद है तो वो आपकी बातों को कोई महत्व नही देगा, लेकिन अगर हम उससे इस कायनात के बारे में बात करें, आसमान, ज़मीन, पहाड़, चाँद, सूरज और फिर सबसे बढ़कर स्वयं मनुष्य और उसका स्थान और उसकी ज़िम्मेदारियों के सिलसिले में बातचीत करें, समाजी ख़राबियों और समाज के सुधार के जो तरीक़े हो सकते हैं उन पर बातचीत करें, और फिर उनको बताएं कि इस्लाम उनके बारे में क्या कहता है, मानव का वो क्या मार्गदर्शन करता है, और समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए वो मुसलमानों को क्या हिदायतें देता है, और फिर उनको इस बात पर तैयार करें कि वो इस्लामी शिक्षाओं की अपने धर्मों, फ़लसफ़ों और दृष्टिकोणों से तुलना करें, ये वो तरीक़ा है जिससे उनके अन्दर न ज़िद पैदा होगी, न हठधर्मी और न उससे उनमें धार्मिक भावना भड़केगी और धीरे धीरे वो इस्लाम के क़रीब आते जाएंगे, उनकी अक्ल पहले ही इस्लाम ले आयेगी फिर धीरे धीरे दिल भी इस्लाम के नूर से चमक उठेगा।

□□□□

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—प्रस्तुति : फौजिया सिद्दीका —इदारा

प्रश्न : क्या मुहर्रम के महीने में निकाह हो सकता है? कुछ लोग कहते हैं यह गमी का महीना है इसमें शादी नहीं होनी चाहिए।

उत्तर : निकाह का ईजाब व कबूल हर महीने के हर दिन हो सकता है। निकाह एक इबादत है। हां यह एक खुशी का मौका भी है कि एक दूल्हे को अपनी शरीके हयात मिलती है। लेकिन यह खुशी इबादत से जुड़ी हुई है। कोई गमी किसी इबादत के माने नहीं। निकाह तो हज के एहराम की हालत में भी हो सकता है। फिर मुहर्रम का महीना गमी का महीना क्यों? हां इस महीने की दस तारीख को हज़रत हुसैन रजि0 अपने 72 साथियों के साथ शहीद कर दिये गये। बड़ा ही गमनाक वाकिआ हुआ लेकिन चाहे जितना दर्दनाक हादिसा हो आम लोगों के लिये गम तो तीन दिन मनाना दुरस्त है अलबत्ता मरने वाले की औरत चार महीने दस रोज तक सोग मनाएगी। हजरत हुसैन को तो शहीद हुए 1370 वर्ष हो चुके हैं अब उनका गम मनाना या जिस माह वह शहीद हुए उस महीने को गमी का महीना कहना कैसे दुरूस्त है ? जरा सोचने की बात है उम्मत को सबसे जियादा गम अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की वफात पर हुआ वह 12 रबीउल अव्वल है लेकिन आज उम्मत उसी रोज खुशियाँ मनाती है, अगरचे शरअन यह भी मतलूब नही है लेकिन यह कहा जा सकता है कि 10 मुहर्रम से ज़्यादा 12 रबीउल अव्वल का दिन गम का दिन है। बस मुहर्रम के महीने में यहाँ तक कि 10 मुहर्रम को निकाह करने में कोई हरज नही और बिला कराहत दुरूस्त है। वल्लाहु तआला अअ़लम।

प्रश्न : क्या हज़रत अली रजि0 के तअल्लुक़ात अपने से पहले तीनों खुलफा से अच्छे नहीं थे ?

उत्तर : हज़रत अली रजि0 के तअल्लुक़ात उन से पहले के तीनों खुलफा हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान रजि0 से बहुत ही अच्छे थे, कभी भी जरा सी भी अनबन नही हुई। हज़रत अबू बक्र रजि0 के इन्तिकाल के बाद उन की एक अहलिया उम्मे मुहम्मद से हजरत अली रजि0 ने निकाह पढाया मुहम्मद बिन अबू बक्र की तरबीयत हज़रत अली के घर हुई। हजरत अली रजि0 की एक साहिब जादी हजरत उम्मे कुल्सूम का निकाह हज़रत उमर रजि0 से हुआ। जब बागियों ने हज़रत उस्मान रजि0 को घेरा तो उन के दरवाज़े पर हजरत अली रजि0 के हुक्म से हजरत हसन और हज़रत हुसैन पहरा दे रहे थे। मैदाने करबला में शहीद होने वाले अलवी जांनिसारों के नाम अबू बक्र उमर और उस्मान भी मिलते हैं, यह सारी बातें इस बात पर दलालत करती हैं कि हज़रत अली रजि0 के तअल्लुकात तीनों खुलफा से बहुत अच्छे थे वह उनका हर मौके पर तआउन फरमाते थे और उन के पीछे जमाअत की नमाज अदा करते थे। जियादा मालूमात के लिये पढ़िये अलमुर्तजा और खुलफाए अरबा यह दोनों किताबें हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 की लिखी हुई हैं।

प्रश्न : कुछ लोगों का कहना है कि जब कादियानी मिर्जाई के मुबल्लिगीन मुसलमान लड़कों को मुफ्त तालीम देते हैं और वही कुर्आन पढ़ाते हैं जो हम पढ़ाते हैं वही कल्मा पढ़ाते जो हम पढ़ाते हैं तो उन से बच्चों को पढ़वाने से क्या हरज है?

उत्तर : इस मसअले को जरा ध्यान से समझने की जरूरत है। पहली बात तो यह है कि कादियानी मिर्जाई इस्लाम से ख़ारिज हैं इस मसअले में उम्मत के उलमा मुत्तफ़िक हैं। दूसरी बात यह कि जिस बस्ती के बच्चों को वह मुफ्त तालीम देते हैं मिर्जाई लोग वहां के सादा लौह मुसलमानों के साथ तरह तरह के एहसानात कर के उन को अपने से करीब करते हैं, उन को कादियान

ले जाते हैं और उन को कादियानी मजहब में दाखिल कर के गुमराह कर देते हैं।

यह सच है वह वही कल्मा पढ़ाते है जो हम पढ़ाते हैं लेकिन मुहम्मद रसूल सल्ल0 से उन की मुराद मिर्जा गुलाम होती है। उन का कहना है कि जब कल्मे में मुहम्मद से मुराद मिर्जा है तो कल्मा बदलने की क्या जरूरत है? यह सही है कि शुरू में छोटे बच्चे को यह बात न समझाऐंगे। लेकिन जब उस बच्चे के घर वालों को कादियानी बना लेगें फिर वह बच्चा कादियानी से तालीम व तरबीयत लेकर बड़ा होगा तो उस को मिर्जा को मुहम्मद और अहमद मानने में कोई मुश्किल न नज़र आएगी लिहाजा गुमराहों से बच्चों को कल्मा नमाज पढ़वाना कितना खतरनाक है?

तीसरी बात यह कि बेशक कुर्आन मजीद के अल्फाज व तलफ्फुज उसी तरह पढ़ाते हैं जिस तरह हम पढ़ाते हैं लेकिन उन्होंने कुर्आन मजीद के माना और तफ्सीर में बहुत बदलाव कर डाला है उन का कहना है कि यह माना अल्लाह तआला ने गुजरे हुए बुजुर्गों पर नही खोले यह माना तो मिर्जा ही को बताए गये हैं। आयत करीमा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह से वह यह समझते है कि मुहम्मद से यहाँ मुराद मिर्जा गुलाम हैं। कुर्आन मजीद में आया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मेरे बाद एक रसूल आऐगा उनका नाम अहमद होगा मिर्जा कहते है कि वह अहमद मैं हूँ जब कि पूरी उम्मत के उलमा का इत्तिफाक़ है कि यहा अहमद से मुराद हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम हैं।

कादियानी आयत के अल्फाज खातमन्नबीयीन से हुजूर सल्ल0 को आखरी नबी नहीं मानते जब कि उम्मत के उलमा का इस पर इत्तिफाक़ है कि इस आयत से खतमे रिसालत व नुबुवत मुराद है और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 आखिरी नबी व रसूल हैं, फिर मिर्जा दावा करता है कि कुर्आन मजीद की मुतअद्दिद आयात उस के बारे में हैं और मुतअद्दिद आयात खुद मिर्जा पर उतरी है। इन बातों के मालूम हो जाने के बाद कोई मुसलमान कादियानियों को न अपनी बस्ती में दीनी काम करने की इजाजत दे सकता है न उनसे अपने बच्चों को दीन पढ़वा सकता है। दीनी भाइयो! जहाँ तक मुम्किन हो कादियानियों को सादा लौह मुसलमानों के करीब न फटकने दो और अपने बच्चों की दीनी तालीम का खुद इन्तिजाम करो जरूरत पड़ने पर देवबन्द, नदवा या किसी भी बडे दीनी इदारे से रुजू करो इन्शा अल्लाह जरूर कुछ रहनुमाई मिलेगी।

कादियानियों के पास इस्लाम दुशमनों की दौलत है ताकि वह मुसलमानों को बे दीन बनाए उनसे होशियार रहने की ज़रूरत है अल्लाह तआला मदद फरमाए।

❑❑❑❑

औरंगज़ेब ने तुलसीदास जी के वंशजों की आर्थिक मदद की थी

तुलसीदास जी के परिजनों के आग्रह पर मुग़ल सम्राट अकबर एवं औरंगज़ेब ने उनके ख़र्च के लिए एक घाट की चुँगी वसूलने के अधिकार उन्हें सौंप दिये थे। 1980 के दशक की शुरूआत से यह अधिकार वापस ले लिए गये तथा आज तुलसी के वंशज उनके पैतृक गांव उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के राजापुर गांव में रामचरित मानस की हस्तलिखित मूल प्रतिलिपि तथा तुलसीदास से संबद्ध अन्य वस्तुओं क़े प्रदर्शन से मिलने वाले धन से अपना जीवन–यापन कर रहे हैं।

तुलसीदास के वंशजों को घाट से 664 रूपये पचास पैसे वार्षिक धनराशि आज़ादी के बाद से 1972 तक निरंतर मिलती रही। सन् 1972 के बाद तत्कालीन कॉंग्रेस सरकार ने लोक निर्माण विभाग के हाथ में घाट का अधिकार दे दिया जो लाखों में नीलाम किया जाता है। आज तुसली के वंशजों के पास आय का कोई उपयुक्त साधन नहीं बचा है।

एक नागवार गुफ़्तगू

—ख़ालिद लखनवी

मैं एक लम्बे सफर पर था सफर रेल से था, बर्थ रिजर्व थी। करीब ही एक मौलवी साहिब की बर्थ थी। मौलवी साहेब मैंने इसलिए कहा कि उन की बड़ी सी दाढ़ी थी कुर्ते पैजामे और ऊँची टोपी में थे। अस्र की नमाज़ पढ़ चुका था शायद उन्होंने भी अस्र की नमाज अदा कर ली थी। मैं ने सलाम अर्ज किया, उन्होंने जरा मुँह फेर लिया जैसे सुना न हो, मैंने दोबारा सलाम अर्ज़ किया, बड़ा रूखा जवाब दिया, मैंने खैरियत पूछी, जवाब में अल्हम्दुलिल्लाह कहा, मैंने पूछा वतन शरीफ? बोले बरेली शरीफ, उन्होंने पूछा आप कहां के हैं? मैंने कहा गरीब खाना लखनऊ में है। कहने लगे किस अकीदे के हैं? मैंने अर्ज़ किया अहले सुन्नत वल जमाअत, कहने लगे देवबन्दी तो नहीं हो? मैंने कहा खालिस लखनवी। कहने लगे आला हज़रत को मानते हो? मैंने कहा हजरत मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह का रसूल मानता हूँ, और उन से मुहब्बत को फ़र्ज़ समझता हूँ, उनकी पैरवी ही को इस्लाम जानता हूँ। कहने लगे, हुजूर को माकान व मायकून का आलिम मानते हो?

मैं : मैं यह मानता हूँ कि आप (सल्ल0) अल्लाह के रसूल थे, और रिसालत के नाते से जब जिस इल्म की जरूरत हुई अल्लाह ने उस से आगाह कर दिया इस तरह माकान व मायकून में से जब जिस चीज़ के इल्म की जरूरत हुई अल्लाह ने उस से आगाह कर दिया।

मौलवी साहिब : आप धुमा फिरा कर बात कर रहे हैं सीधे नही कहते कि अल्लाह ने आप (सल्ल0) को माकान व मायकून का इल्म अता फरमाया था।

मैं : मेरे इल्म मे कोई हदीस ऐसी नही है जिसमें नबी (सल्ल0) ने उम्मत से फरमाया हो कि उन को माकान व मायकून का आलिम मानो।

मौलवी साहिब : आप की तॉलीम क्या है?

मैं : मैंने युनिवर्सिटी से एम0ए0 किया है नीज बी0एड0 और एम0एड0 किया है। और एक डिग्री कालेज में लेक्चरर हूँ। मौलाना आप की तालीम?

मौलवी साहिब : मैं आलिम हूँ, मौलाना हूँ दीन के बारे में आप को मेरी बात मानना होगी। मैं कहता हूँ कि हुजूर को माकान व मायकून का आलिम मानना जरूरी है, आप को हाजिर व नाजिर मानना जरूरी है, आप को मुखतारे क़ायनात मानना ज़रूरी है।

मैं : हाँ मौलाना साहिब एक आलिम की बात एक गैर आलिम को ज़रूर मानना चाहिये, लेकिन जब एक ही मसअले में दो आलिम अलग अलग बल्कि मुतजाद बात कर रहे हों तो एक पढ़ा लिखा गैर आलिम यह समझने की कोशिश ज़रूर करेगा कि किस की बात सही है। मौलाना साहिब मैं आलिम नहीं हूँ मगर आप से यह जानना चाहूंगा कि आप वह हदीस सुनाइये जिसमें आप (सल्ल0) ने फरमाया हो कि मुझे हाजिर व नाजिर मानो मुझे मुखतारे कायनात मानो, मैं सोचता हूं कि अल्लाह से कोई पर्दा नही लेकिन हूजूर के सामने बरहना होना किसी तरह जाइज़ नही। हुजूर (सल्ल0) हाजिर नाज़िर होकर हम लोगों को नंगे खुले हरगिज़ न देखेंगे, फिर देखता हूँ कि हज़रत उमर रज़ि0 को एक मजूसी ने शहीद कर दिया, हज़रत उस्मान रज़ि0 को फसादियों ने शहीद कर दिया, हज़रत अली रज़ि0 को इब्नि मुलजिम ने शहीद कर दिया, हजरत हुसैन रज़ि0 को यजीदी फौज ने शहीद कर दिया हज़रत इब्न जुबैर रजि0 को हरमे मक्की में शहीद कर दिया गया, यह तमाम शहादतें हुजूर (सल्ल0) की मर्जी और इख़्तियार में हरगिज नही हुई, बेशक यह सब कुछ अल्लाह की मर्जी व मसलहत से हुआ, और अल्लाह की मर्जी के बारे में कोई सवाल नहीं किया जा सकता, लेकिन रसूल (सल्ल0) को जरूर इन शहादतों पर दुखः हुआ। आप हाजिर व नाजिर थे तो किस तरह अपने नवासे पर तीर व तलवार देखते रहे और अपने इख़्तियार से दिफाअ न किया क्या आप की मौजूदगी में कोई मजकूर—ए—बाला हज़रात पर हम्ला होता और आप बचाव की तदबीर न करते? मौलाना साहिब मुझे समझाइये।

मौलवी साहिब : हमारे हुजूर (सल्ल0) ने वही चाहा जो आप के रब ने चाहा।

मैं : मैं भी यही समझता हूँ मौलाना, लेकिन यह उस वक्त मानता हूँ जब जो कुछ होना होता है हो चुकता है हो जाने से पहले बन्दे को दिफाअ और कोशिश लाज़िमी है। हमारे हुजूर (सल्ल0) ने अपने चचा अबू तालिब के

लिये आख़िर आख़िर तक कोशिश की कि वह ईमान लाएं लेकिन वह ईमान न लाए, आख़िर में बताया गया कि जिस को आप चाहें उसका ईमान लाना जरूरी नहीं जिसे अल्लाह चाहे उसे हिदायत मिलती है। हुजूर (सल्ल0) ने हरगिज़ नही चाहा कि अबू लूलू हजरत उमर रजि0 को कत्ल कर दे हुजूर (सल्ल0) ने हरगिज़ नही चाहा कि उनके नवासे को शिम्र क़त्ल कर दे। मौलाना साहिब आप मुझे अक़ीदे में न उलझाइये सीधे से बताइये कि हुजूर (सल्ल0) ने हमसे क्या चाहा है?

मैं समझता हूँ कि हुजूर (सल्ल0) ने अपनी जात के बारे में कुरेदने का हुक्म नहीं दिया है सीधे से फरमाया है कि मुझे अल्लाह का रसूल मानो तो मैं कहता हूँ कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। मैं यह भी मानता हूँ कि आप की मुहब्बत जिस दिल में नहीं उस दिल में ईमान नहीं, मौलाना साहिब बताइये इस से ज़ियादा आप मुझसे क्या चाहते हैं ?

मौलवी साहिब : आप को किसी वहाबी ने बहुत पक्का कर दिया है आप से गुफ़्तगु फुजूल है, अच्छा मैं चला मेरा स्टेशन आ गया।

मैं : मौलाना अस्सलामुअलैकुम, मौलाना सलाम का जवाब दिये बिना उतर गये। मैं हैरान था कि कैसे मौलाना हैं कि सीधे साधे मुसलमान को गैर ज़रूरी बातों में उलझा कर ज़रूरी बातों पर परदा डालते हैं।

ऐ अल्लाह मुझे शैतानी फित्नों से महफूज़ रख और अपनी पसन्दीदा राह पर चला। आमीन! ❑❑

समाज सुधार क्यों? और कैसे?

शरीअत को नुकसान पहुँचाने वाले बाज़ जाब्तों को बदलवाया, और इस दायरे में जब कोई उलझाव होता है, बोर्ड इसकी फ़िक्र करता है और इसके लिए प्रयास करता है।

दूसरा काम मुसलमानों को शरीअत पर अमल करने के दायरे में लाने का है जो बड़ा काम है। इसके लिये बोर्ड ने अन्य मिल्ली संस्थाओं की मदद से समाज सुधार के शीर्षक से काम शुरू किया है। ज़रूरत है कि इसके लिये जगह–जगह सम्मेलन किये जायें, मुसलमानों को शरीअत की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से रोका जाये। उनके मामलों में गैर इस्लामी रीति–रिवाज घर कर गये हैं, उससे बाज़ रखने के प्रयास किये जायें। ताकि दुनिया व आख़िरत दोनों में नुकसान का जो ख़तरा है वह दूर हो।

निकाह व शादी में गैरज़रूरी (अनावश्यक) नुमाइश व आराइश, बेजा ख़र्च, जाहिलाना रस्में, नासमझी के तरीक़े, जिनसे एकतरफ तो खुदा और रसूल को नाराज़ किया जा रहा है और दूसरी तरफ वह बहुमूल्य पूँजी जो स्वयं पति–पत्नी और मिल्लत के जरूरी कामों में लगाई जा सकती है, नष्ट होती है। और इसी के साथ लड़की और लड़के के माँ–बाप के लिये बोझ का कारण भी बनता है। ज़रूरत है कि इसके सुधार के लिये लोगों को समझाया जाये कि वह क्षणिक नाम व नमूद के लिये इस तरीक़े से अपने आर्थिक भविष्य को भी नुक़सान पहुँचाते हैं और मिल्लत के ज़रूरी तक़ाज़ों को पूरा करने में जो सहभागिता की जा सकती है उससे भी वंचित रहते हैं और यह भी कि अल्लाह व रसूल की नाराजगी मोल लेते हैं। यह नाराजगी उनके लिये लोक–परलोक दोनों में हानिप्रद होती है।

निकाह व शादी में शरीअत के मोतदिल (औसत) तरीक़े की पाबन्दी न करके, कभी–कभी पति–पत्नी के बीच के सम्बन्ध कटु हो जाते हैं, और अलाहदगी, तलाक़, हत्या तक की नौबत आ जाती है। इसी तरह मीरास की तक़सीम का मामला है, रिश्तेदारों के साथ सद्व्यवहार करने का मामला है। एक महत्वपूर्ण बात शराब पीने और जुआ खेलने की बुरी आदतें हैं। लाटरी एक तरह का जुआ है।

इस तरह की ग़लतकारियाँ मुसलमानों को घुन की तरह लगती जा रही हैं। हमारे बुद्धिजीवी, लेखक और प्रवचनकर्ता सज्जनों को आगे आकर इन ख़राबियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

जारी.........

दहेज कानूनों पर एक नज़र

❑❑ रेणुका पामेचा

सर्वोच्च न्यायालय ने 1983 में बनी 498ए धारा की फिर से जांच पड़ताल करने की बात कहकर एक नयी बहस को जन्म दिया है यह धारा बढ़ती दहेज प्रताड़ना व अन्य घरेलू अत्याचारों से महिलाओ को राहत देने व प्रताड़ित करने वालों को कठोर सज़ा देने के लिए 1983 में भारतीय दंड संहिता में जोड़ी गयी। कोर्ट का कहना था कि बड़ी संख्या में झूठे मामले कोर्ट में आ रहे हैं। इस तरह के वैवाहिक मामलों का कोर्ट में अंबार लग रहा है।

जस्टिस दलवीर भंडारी व जस्टिस के0एस0 राधा कृष्णन की खंडपीठ ने कहा है कि घरेलू हिंसा के दहेज संबंधी मामलों में बढ़ा चढ़ाकर शिकायतें की जा रही हैं। आपराधिक प्रक्रिया के कारण संबंधित व्यक्तियों को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। अंत में चाहे सजा न हो फिर भी बहुत सी खरोंचें जीवन के साथ चिपक जाती हैं। इससे कोर्ट में ही केसेज का अंबार नहीं लगा है बल्कि परिवारों की शांति भी भंग हो गयी है। समाज में मधुरता, शांति व खुशहाली को बहुत बड़ा झटका लग रहा है। अदालत ने कहा है कि यह अब जरूरी हो गया है कि व्यवस्थापिका इस कानून में उचित बदलाव करे।

वकीलों को सावधान करते हुए बेंच ने कहा है कि बार के सदस्यों का सामाजिक दायित्व है कि वे समाज के ताने-बाने को न बिगड़ने दें। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि पारिवारिक जिन्दगी समाप्त न हो जाए। वकीलों का दायित्व है कि शिकायत में छोटी-छोटी घटनाओं का उल्लेख न करें। ज्यादातर शिकायतें वकीलों की सलाह पर दायर की जाती हैं। उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि एक शिकायत के बाद विभिन्न तरह की शिकायतें एक के बाद एक दर्ज न हों। इस फैसले के बाद तो जैसे सबको मौका मिल गया कि औरतों को झूठा बताएं और साथ में इस तरह लिखना शुरू हो गया है कि हिंसा तो छोटी-मोटी बात है। इस कारण महिला पति व उसके पूरे परिवार को थाने में घसीट लेती है। अस्ल में कोई भी कानून जब एक पक्ष को मदद करता है और उसकी मार दूसरे पक्ष अर्थात पति व उसके परिवार पर पड़ती है तो पूरी पितृसत्ता हिलती है। इस कारण बड़ी आसानी से औरत को झूठा कहकर यह धारणा बना दी जाती है कि मामला तो ज्यादा बड़ा नहीं था और सबको हथकड़ी लगवा दी। हो सकता है कुछ मामले सामान्य हों ऐसी स्थिति में पुलिस जिस पर जांच का दायित्व है वह अच्छे से जांच करके सच को सामने लाए। इसके बजाए पुलिस महिला पर दबाव बनाती है कि वह केस वापस ले ले। महिला पर चारों तरफ़ से इतना दबाव पड़ता है कि उसे यह लिखना पडता है कि केस गलतफ़हमी में दायर कर दिया था। उसके जीवन में सब ठीक है। यह धारा समझौते की नहीं है इस कारण पुलिस एफ0आर0 पेश कर देती है। केस चलता रहता है।

दूसरी महतपूर्ण बात यह है कि 498ए सिर्फ़ दहेज विरोधी कानून ही नहीं है, यह क्रूरता के खिलाफ हथियार भी है परन्तु जब महिला क्रूरता की शिकायत दर्ज करने थाने पर आती है या वकील के पास जाती है तो उसे यह सलाह दी जाती है कि इसमें दहेज की माँग वाला मुद्दा डालो, नहीं तो केस कमजोर हो जाएगा। ऐसी स्थिति में अन्य क्रूरता तो पृष्ठिभूमि में चली जाती है और दहेज प्रमुख हो जाता है जिसे सिद्ध करना मुश्किल होता है। इस प्रकार वह झूठी बना दी जाती है। घर में होने वाली क्रूरता इतनी ज्यादा है कि उसको शायद पुलिस या कोर्ट समझ भी नहीं सकते।

सर्वोच्च न्यायालय के एक दूसरे फैसले में जस्टिस आर0एम0 लोढा और ए0के0 पटनायक ने कहा है कि पर्याप्त दहेज न लाने के लिए महिला को ताना मारना धारा 498ए और 304बी के तहत अपराध है। हर लडकी शादी के बाद सुखी जीवन जीना चाहती है लेकिन शादी के बाद हर रोज़ उसे दहेज या अन्य बात को लेकर ताने कसे जाएं तो वह क्रूरता व उत्पीड़न है। यानी दहेज केलिए महिला के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार अपराध है। यह फैसला संतोष के मामले में दिया गया है। 1992 में शादी के एक साल बाद उसकी हत्या कर दी गयी थी। उसका पति उसे कम दहेज लाने के लिए ताने मारता था। स्कूटर व पच्चीस हज़ारा रूपये लाने के लिए उसे मजबूर करता था। सच तो यह है कि 498ए की शिकायत पर गंभीरता से कार्यवाही हो तो औरतें मरेंगी नहीं।

(विविधा फीचर्स)

धरती पर ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव

अनु0: एम0 हसन अंसारी

मुहम्मद फ़िरोज़ अख्तर

वैज्ञानिकों के अनुसार वर्ष 1890 ई0 तक इन्सान अपनी आधी से अधिक एनर्जी कोयले, तेल और गैस से हासिल करने लगा था जिस के नतीजे में बिना ईंधन से चलने वाली गाड़ियाँ कारों में बदल गयीं। इन्सान और जानवरों द्वारा चलने वाली गाड़ियाँ ट्रैक्टर और क्रेन में बदल गयीं। निःसन्देह भविष्य में उद्योग को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। औद्योगिकरण की इस दौड़ में न जाने कितने लोग मौत के शिकार हो गये। नगरों की जलवायु पूरी तरह से बदल गयी। बढ़ते धुएँ और प्रदूषण के कारण लोग कई तरह की बीमारियों की चपेट में आ गये। विद्युत के अविष्कार ने तो जैसे उद्योग का रूख़ ही मोड़ कर रख दिया। लोगों का जीवन पूरी तरह से बदल गया। सूरज की रौशनी के अनुसार ही जीवन की गाड़ी चलने की परम्परा पर तो जैसे ग्रहण लग गया। यह एक नये युग की शुरूआत थी जहाँ खनिज ईंधन की जरूरत काफी बढ़ चुकी थी। हवाई जहाज़, टी0वी0, और बाद में हर मर्ज़ की दवा बन चुका इन्टरनेट सभी को एनर्जी खनिज ईंधन से मिलती है।

साँस लेने में कठिनाई और आँखों में खुजली जैसी बीमारियाँ बढ़ सकती हैं। गत दो दशकों में अमेरिका में इसका असर देखने में आया है। वहाँ दमा और एलर्जी के रोगियों की संख्या बढ़ी है। जीवन–शैली में तेज़ी से आये परिवर्तन और प्रदूषण के कारण लोगों के साँस लेने तथा एयरबोर्न एलर्जी से अप्रभावित रहने की ताक़त कमज़ोर हुई है। कार्बनडाई आक्साइड के तल और ताप क्रम में गर्मी बढ़ने के कारण पेड़–पौधे तेज़ी से बड़े होते हैं और जल्दी मुर्झा जाते हैं, जिससे वातावरण में प्रदूषण बढ़ता है। गत एक दशक में आर्कटिक की लगभग 125 झीलें समाप्त हो गयीं, जिससे शोधकर्ताओं की इस बात को बल मिलता है कि ग्लोबल वार्मिंग का सबसे अधिक प्रभाव पृथ्वी के निकट के प्लेनेट्स (ग्रहों) पर पड़ेगा। जब इस की जाँच की गई कि पानी कहाँ ग़ायब हो रहा है तो पता चला कि झील के नीचे का कठोर तल नष्ट हो रहा है। जब स्थायी रूप से जमी हुई मज़बूत सतह (तल) पिघलने लगेगी तो झीलों का पानी बहकर जमीन में जाने लगेगा। यह बिल्कुल वैसी ही हालत होगी जैसे कि बाथ टब से प्लग निकाल दिया गया हो। वहीं जब झीलें नही रहेंगी तो इको सिस्टम पर उल्टा असर पड़ेगा।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गिलहरी, चूहे जो पृथ्वी के भीतरी भागों में बड़ी संख्या में हुआ करते थे, ऊपरी भागों में आने लगे। शोधकर्ताओं के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण उनकी नस्लों में परिवर्तन होने लगा। शोधकर्ताओं ने सचेत किया है कि आने वाले समय में आर्कटिक मे पाया जाने वाला पोलर बियर (ध्रुवीय भालू) का अस्तित्व भी ख़तरे में पड़ सकता है। क्योंकि वह बर्फ में रहता है और बर्फ तेज़ी से पिघल रही है। बढ़ते ताप क्रम के कारण न केवल बड़े ग्लेशियर पिघल रहे हैं बल्कि भूतल के अन्दर की कठोर तह भी पिघल रही है। इसके पिघलने के कारण जमीन सिकुड़ेगी जिससे बड़े गड्ढे हो जायेंगे। ज़मीन धँसने की सम्भावना बढ़ेगी, साथ ही रेलवे ट्रैक, हाईवे और घरों को भी काफी नुक़सान पहुँचेगा। शोधकर्ताओं का कहना है कि स्माल पॉक्स जैसी कई जान लेवा बीमारी भी तेज़ी से बढ़ेगी।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण कामवासन (सेक्सुअल) की क्षमताओं में काफ़ी परिवर्तन आयेगा। ऐसे में उनका ही जीवित रहना सम्भव हो पायेगा जो इन हालात से तालमेल बिठा सकते हैं, जिस तरह से ग्लोबल वार्मिंग की मुसीबत बढ़ रही है इससे जानवरों और पक्षियों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जीन ट्रॉस्फर होगी और कई नस्लों में बड़े परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

वाशिंगटन में अमेरिकन एसोसियेशन फॉर दी एडवॉसमेंट ऑफ साइंस की वार्षिक बैठक का कारण ग्रीन हाउस गैसें हैं जो इन्सान के औद्योगिक किया-कलापों के कारण पैदा होती हैं। यह ग्रीन हाउस गैसें कार्बन डाइआक्साइड, मेथीन और नाइट्रेट आक्साइड हैं। यह गैसें ज़मीन से निकलने वाली गर्मी को सोखती हैं और ज़मीन को गर्म रखती हैं। इसे ही ग्रीन हाउस एफेक्ट कहा जाता है। यह असर (एफेक्ट) एक हद तक ज़मीन को ज़रूरी भी है। लेकिन जब मानव के अनेक क्रिया-कलापों के कारण वायुमण्डल में इन गैसों की मात्रा अधिक हो जाती है, हद तो यह कि जमीन से निकलने वाली गर्मी को सोखकर ज़मीन के ऊपर एक चादर बना देती हैं, गर्मी अन्तरिक्ष (स्पेस) में नहीं रहती है, जिसका असर यह होता है कि औसत ताप क्रम बढ़ता चला जाता है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से अब तक पृथ्वी के औसत ताप क्रम में 1.1 डिग्री फॉरेनहाइट की बढ़ोत्तरी हुई है। गत 40 वर्षों में यह बढ़ोत्तरी 0.5 डिग्री फॉरेनहाइट है। इतना ही नहीं केवल बीसवीं सदी में जितनी ग्लोबल वार्मिंग हुई है, उतनी पिछले 400 से 600 वर्षों के दौरान नहीं हुई। बीसवीं सदी में सर्वाधिक गर्म साल 1990 की दहाई में रहा। 1998 में ज़मीन का ताप क्रम शक्तिशाली ऐन्टीनों के कारण बढ़ा, यह सबसे ज़्यादा गर्म साल रहा। अगर ताप क्रम इस तरह बढ़ता रहा तो बढ़ोत्तरी की यह दर 2050 तक ग्यारह डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुँच जायेगी। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पूरी दुनिया में पहाड़ों पर ग्लेशियर पिघल रहे हैं। गंगोत्री तो इस साल 23 मीटर की दर से कम हो रही है, इस गति से हिमालय के ग्लेशियर की लम्बाई कम होती रही तो आने वाले सालों में भारत, चीन और नेपाल के लाखों लोगों के लिए पीने के पानी की किल्लत हो जायेगी। यही नहीं ग्लेशियर के पिघलने के कारण नदियों में बाढ़ भी आ जायेगी। ग्लोबल वार्मिंग से उत्तरी ध्रुव पर गत चार दशकों में बर्फ की मोटी चादर चालीस प्रतिशत कम हो गई है।

गत एक सदी में समुद्र तल लगभग तीन हज़ार साल पहले के मुक़ाबले में तीन गुना अधिक तेज़ी से बढ़ा है। मियामी युनीवर्सिटी के एक रिसर्च से पता चलता है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण उत्तरी ध्रुव पर जो बर्फ पिघल रही है वह अपने साथ वहाँ की वनस्पति खास कर अल्जी को भी बहा ले जा रही है। अगर ग्लोबल वार्मिंग पर क़ाबू नहीं पाया गया तो जलवायु में इस प्रकार परिवर्तन होगा कि मानव जीवन ख़तरे में पड़ जायेगा और कई समुद्र तट और द्वीप डूब जायेंगे। गर्मी बढ़ जायेगी, अकाल पड़ेगा और पानी के लिए मारामारी होगी। हर मौसम अपना भयावह असर दिखायेगा, बाढ़ आयेगी, जिससे जान व माल का क़ाफी नुक़सान होगा और गर्मी से पैदा होने वाली बीमारियाँ फैलेंगी।

(रोज़नामा उर्दू, राष्ट्रीय सहारा लखनऊ, 22 अगस्त 2010 से साभार)

शरीअत व तरीक़त

जो तरीक़त शरीअत की ताबेअ नहीं वह ग़लत राह है। तरीक़त को तक्वीनी उमूर पर मामूरों से जोड़ना बड़ी भूल है।

(इदारा)

जनता की सेहत की अनदेखी क्यों ?

मिलावट करने वालों को न बख्शें

दिल्ली हाइकोर्ट ने खाद्यान्न, सब्जियों और खाने–पीने की अन्य चीजों में मिलावट पर कड़ा रूख अपनाते हुए दिल्ली सरकार के खाद्य विभाग को नोटिस जारी कर दो सप्ताह के भीतर जवाब मांगा है। मिलावट पर दायर की गयी एक जनहित याचिका में सेहत के साथ खिलवाड करने वाले अनेक कृत्यों का उल्लेख किया गया है। याचिकाकर्ता सालिक चंद जैन के वकील सुग्रीव दूबे ने याचिका के माध्यम से कोर्ट के समक्ष साम्प्रदायिक बू भी परोसने की कोशिश की। उन्होंने आरोप लगाया कि देसी घी के नाम पर जानवरों की चर्बी मिला घी खासतौर से त्योहारों के दौरान धडल्ले से बेचा जाता है। हो सकता है कि डालडे और देसी घी में चर्बी की मिलावट अब भी हो रही हो, लेकिन इधर कुछ वर्षों में जब भी छापेमारी हुई है, इनमें चर्बी की मिलावट नहीं पकडी गयी। दूसरी चीजों की मिलावट बार–बार उजागर हुई है, लेकिन मिलावटियों के खिलाफ सामान्यतः ठोस व कड़ी कार्यवाही संभव नहीं हो पाई। अदालत के सामने अन्य जो तथ्य पेश किये गये व इस प्रकार हैं– राजधानी दिल्ली की सभी मंडियों में सब्जियों और फलों को आकर्षक व ताजा दिखाने के लिए हानिकारक रंगों से रंगा जाता है, जिससे कैंसर होने की अधिक संभावना होती है। टमाटर की चटनी और केचप की नकली रंग का इस्तेमाल होता है और बाजारों में पान में इस्तेमाल होने वाला कत्था तो 80 फीसदी नकली है। ये सब कैंसर और अन्य घातक बीमारियों के खतरे को बढाने में प्रभावकारी भूमिका निभाते हैं। 80 फीसदी दालों को पालिश किया किया जाता है। कार्बोहाइड्रेड लगा आम और केला राजधानी में हर जगह बिक रहा है, अचार में हानिकारक प्रिजर्वेटिव मिला होता है। याचिका में कहा गया है कि यह सीधे तौर पर आम आदमी की सेहत से जुड़ा हुआ मामला है, किन्तु इस ओर लगातार लापरवाही ही नज़र आती है।

उल्लेखनी है कि 13 सितम्बर 2005 से प्रिवेंशन ऑफ़ फूड एडल्ट्रेशन रूल्स लागू है, लेकिन मिलावट का धंधा लगातार जारी है, बल्कि इसमें तेजी आती जा रही है। हालत यह है कि मिलावट रोकने वाला खाद्य अपमिश्रण विभाग भ्रष्टाचार में कंठ तक डूबा हुआ है। कोई अधिकरी मिलावट करने वालों पर हाथ नही डालता, क्योंकि उसकी मासिक रिश्वत तय है, जो वक्त पर पहुँचती रहती है। जनता की सेहत की किसी को कोई परवाह नही है। जब भ्रष्टाचार की रकम ऊपर तक पहँचती हो, फिर भी खामोशी ही खामोशी हो तो स्थिति की भयावहता और गम्भीरता को आसानी से समझा जा सकता है। इस अफ़सोसनाक सूरते हाल को इस हकीकत से भी समझा जा सकता है। वैज्ञानिक सुनीता नारायण ने पेप्सी और कोला की बोतलों की सैंपलिंग करके यह जाँच–रिपार्ट जनता के सामने रख दी थी कि इन पेयों में शरीर घाती तत्व पाये जाते हैं। इनके पीने से कैंसर होने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है। अन्य बीमारियों का भी ख़तरा बढ़ जाता है। यह मामला संसद में भी उठा, सांसदों की समिति बनी, मगर इन पेयों पर रोक नही लगायी गयी। वजह साफ़ है, अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भी सामने भारत सरकार घुटने टेके हुए है। वैसे भी भारत समेत दुनिया के बहुत से देश पूंजीवाद के आगे अपने को पूरी तरह समर्पित कर चुके हैं इस अफ़सोसनाक सूरतेहाल का 'फायदा देश के मिलावटियों को भी मिल रहा है। वे धड़ल्ले के साथ चीज़ों में मिलावट कर जनता की सेहत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि जन–स्वास्थ्य की अनेदेखी न करे और मिलावट पर रोक लगाने के लिए सक्रियता दिखाए। जो मिलावट का धंधा कर रहे हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही करके सजा दिलाए।

□□□□

मुहर्रम के दस दिन के बाद

–मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह0 **अनु0: एम0 हसन अंसारी**

अशर–ए–मुहर्रम (मुहर्रम महीने के शुरू के दस दिन) गुज़र गया, ताजिया दारी और सोज़ख़्वानी (मुहर्रम में एक प्रकार की नज़्म का पढ़ना) की चहल–पहल एक साल के लिए रूख़्सत (विदा) हो गयी। क्या आपके दिल से हुसैन रज़ि0 की याद रूख़्सत हो गयी? क्या आपके ज़ेहन ने भी कर्बला की घटना को भूला दिया? क्या आप भी एक साल तक हुसैन और हुसैन रज़ि0 के कर्बला को भूले हुए रहेंगे? क्या इस्लाम के इतिहास के लिये इस अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना, और कुर्बानी व त्याग, शहादत व जॉबाज़ी के इस दुर्लभ नमूने की मर्यादा व महत्व आपके दिल में इसी क़दर है कि इस्लामी साल के शुरू में गिनती के चन्द दिन उस की यादगार में चन्द रस्में मनाई जायें? वह पवित्र शरीर जो मुहम्मद (सल्ल0) की गोद में पला था, और जिसे आगे चलकर जन्नत के युवा वर्ग का सरदार बनना था, उसके ख़ाक में तड़पते और ख़ून में लोटने की गरिमा क्या आपकी नज़र में बस यहीं तक है कि साल भर में मात्र एक अदा–ए–रस्म के तौर पर एक मर्तबः बिना अपने मन मस्तिष्क को हरकत में लाये, इस दास्तान को सुन लिया करें?

क्या आका दिल हुसैन रज़ि0 की मुहब्बत से, हुसैन की अज़मत से और हुसैन की अकीदत से ख़ाली है? अगर ख़ुदा न करे ऐसा है तो आपको सच्चाई की क़द्र नहीं, हक़ परस्ती प्रिय नहीं, और आपके दिल में ईमान का गुज़र नहीं। हुसैन एक मुट्ठी भर धूल का नाम नहीं! हुसैन नाम है हक़ परस्ती की प्रतिमूर्ति का, ईमान व यक़ीन की मूर्ति का और अर्थ सब्र व शहादत का। जिसके दिल में इस प्यारी व दिलकश शख़्सियत के नाम से चाहत व तड़प की कोई लहर नहीं उठती हो, उसे न सच्चाई की कोई क़द्र है, न उसे हक़ परस्ती प्रिय है, और न उसके दिल में त्याग व बलिदान की कोई वक़अत है। ईमान तो बड़ी लतीफ़ व नाज़ुक चीज़ है, उसका गुज़र ऐसे कठोर हृदय के अन्दर कैसे हो सकता है, पस (इसलिए) हुसैन रज़ि0 की मुहब्बत बिदअत नहीं, ईमान का हिस्सा है। कर्बला की घटना का ज़िक्र करना, इस्लाम के इतिहास की बेहतरीन परम्परा का पाठ पढ़ाना है। शहीदे कर्बला की याद का, ज़िन्दा रखना, अपने जज़्ब–ए–ईमान का ज़िन्दा रखना है।

मुहर्रम (माननीय महीना) को मिटाइये नहीं। इसे बढ़ाइये और तरक्क़ी दीजिये, यादे हुसैन रज़ि0 की (हसीन) ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल न होइये। आपका साल सवाभविक रूप से मुहर्रम से शुरू होता है। कोशिश कीजिए कि साल का ख़ात्मा भी मुहर्रम (क़ाबिले एहतराम अमल) पर हो। और साल का हर महीना आपके यहाँ मुहर्रम ही रहे। खुश नसीब हुसैन रज़ि0 के अँजाम पर आँसू न बहाइये, सीना न पीटिये कि इस तरह का मातम बदनसीब व नामुराद मुर्दों पर किया जाता है। आपका प्यारा हुसैन रज़ि0 तो ज़िन्दों से बढ़कर ज़िन्दा, खुशनसीबों से बढ़कर खुशनसीब और बामुरादों से बढ़कर बामुराद है। अपने दिल में तड़प, लगन और वलवलः पैदा कीजिये कि आपका अंजाम भी हुसैन रज़ि0 के ख़ादिमों और गुलामों, सेवकों और जूती बरदारों का सा हो। मुर्दों का मातम मुर्दा कौमों के लिये छोड़ दीजिये। आप ख़ानदान–ए–नबूवत के चश्म व चिराग को, अली मुर्तज़ा रज़ि0 के नूरे नज़र को बिन्ते रसूल के लख़्ते जिगर को, सरज़मीने हिजाज़ के ज़िन्दा हुसैन व जमील को जगह दीजिये अपनी ऑख की पुतली में, अपने दिल में, अपने प्रत्येक रक्तकण में, अपनी हर साँस में। सच्चा मुहर्रम यह है कि आपके जिस्म का रोऑं–रोऑं त्याग व बलिदान की भावना से मस्त व बेक़रार, बेचैन व बेताब नज़र आने लगे। इस पाक व पाकीज़ा यादगार को एक स्वाँग और तमाशा बना लेना हक़ परस्त हुसैन रज़ि0 के हक़ परस्त पैरुवों (अनुयाइयों) का काम तो नहीं हो सकता। हुसैन रज़ि0 ने तो उस शासक की इताअत (ताबेदारी) न क़बूल की जो कम से कम बज़ाहिर तो मुसलमान था, फिर क्या किसी ग़ैर मुस्लिम ग़ासिब (अतिक्रमणकारी) हुकूमत की चापलूसी और चाकरी में लगे रहना, और ज़बान पर "या हुसैन" का नारा जारी रखना दुरूस्त हो सकता है?

❑❑❑❑

(पन्द्रह रोज़ा तामीरे हयात, लखनऊ 10 जनवरी 2010 से साभार)

पंचायत चुनाव

भारत 15 अगस्त 1947 ई0 को आजाद हुआ और एक गणतन्त्र राज्य बना। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान देश में लागू हुआ। 1951 ई0 में जनप्रतिनिधित्व कानून बना और 1952 ई0 से देश में निर्वाचन या चुनाव होने लगे। ग्राम पंचायत चुनाव भी 1952 ई0 से होते आ रहे हैं। और इस समय (अक्टूबर 2010) उत्तर प्रदेश में त्रिस्तरीय चुनाव हो रहे हैं। पंचायत शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है पंच+आयत और यह दोनों शब्द अरबी भाषा के शब्द हैं। चुनाव शब्द हिन्दुस्तानी है जिसे हिन्दी में निर्वाचन कहते हैं। सन् 1989 ई0 में संविधान में 73वाँ संशोधन कर ग्राम पंचायतों को अधिक सशक्त बनाया गया ताकि भारत जिसकी अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है का, समुचित विकास हो सके इस 73वें संशोधन में त्रिस्तरीय पंचायत की बात कही गयी है। (1) ग्राम प्रधन और ग्रामसभा के सेक्टरवार सदस्यों का चुनाव (2) ब्लॉक डेवलपमेन्ट कमेटी (बी0डी0सी0) के सदस्यों का चुनाव (3) जिला पंचायत के लिए प्रत्येक वार्ड से सदस्यों का चुनाव। इस प्रकार त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव एक बहुत बड़ा कार्य है जिसे सरकारी और अर्ध सरकारी कर्मचारियों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। यह एक महा अभियान है।

पंचायत चुनाव सन् 2010 में लोगों में बड़ी दिलचस्पी देखी गयी इतनी दिलचस्पी इससे पहले नहीं होती थी। वोट का प्रतिशत भी खासा रहा अर्थात विधान सभा और संसदीय चुनाव की अपेक्षा लगभग दुगने मतदाताओं ने वोट डाले यह लोगों में जागृति का द्योतक है। पंचायत चुनाव की इतनी बड़ी व्यवस्था कुल मिलाकर सराहनीय नहीं किन्तु जनता विशेषकर तथाकथित नेताओं और बाहुबलियों पर अंकुश लगाने और उन्हें नियन्त्रण में रखने की दिशा में अभी बहुत कुछ किये जाने की ज़रूरत है। कानून मौजूद है लेकिन उसका पालन जितना होना चाहिए नहीं हुआ, जिसका मुख्य कारण प्रशासनिक मशीनरी की ढिलाई और लोगों में सिविक सेन्स (नागरिकों की संवेदनशीलता) ही अधिक ज़िम्मेदार है। इसके लिए प्रयास किये जाने की जरूरत है अगर ऐसा न किया गया तो दिनों–दिन देश में बढ़ती हुई एनार्की देश को चलाने वालों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन सकती है, जिसका समय रहते नोटिस लिया जाना चाहिए। विशेषकर नई पीढ़ी की सही शिक्षा–दीक्षा, जिसकी शुरूआत घर से होती है, की ओर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है और घर में बच्चों की तरबियत में सबसे अहम (महत्वपूर्ण) रोल माँ का होता है।

पंचायती व्यवस्था का हाल :

गाँव से चौपाल उजड़ गए हैं। किस्से–कहानियों को ऑरकेस्ट्रा और अश्लीलता ने निगल लिया है। भाईचारा और सामाजिकता पर उच्छृंख्लता इस क़दर हावी हो गयी है कि गाँवों से शरीफ़ों का पलायन शुरू हो गया है। सक्षम लोग शहरों की ओर भाग रहे हैं। और मजबूर लोग गाँवों में ख़ौफ़ के साये में जी रहे हैं। पंचायती राज व्यवस्था में विकास और सत्ता के विकेंद्रीकरण के नाम पर लूट का विकेंद्रीकरण हुआ है। नतीजतन अब सामाजिक मुद्दों पर गाँवों की पहलक़दमी लगभग समाप्त हो गई है। बुजुर्ग लोग हाशिये पर डाल दिये गये हैं। दारूबाजों की लफंगई के चलते पंचायत चुनावों से शरीफ़ लोगों ने किनारा कर लिया है। कहीं कोई शरीफ़ आदमी चुनाव में खड़ा होने की कोशिश करता भी है, तो उसे डरा–धमकाकर बैठा दिया जाता है। जिस पंचायती राज व्यवस्था द्वारा राष्ट्र निर्माण के लिए ज़रूरी राजनीतिज्ञ चेतना का विकास होना चाहिए था, उससे सरकारी धन की लूट और गुंडागर्दी का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

गाँवों के सामाजिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न करने की शुरूआत 24 अप्रैल, 1993 को पारित हुए संविधान के 73वें संशोधन द्वारा हुई थी, जिसमें वर्तमान त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की नींव पड़ी थी और सत्ता का विकेंद्रीकरण कर पंचायतों द्वारा गाँवों के विकास के लिए जवाहर रोजगार योजना शुरू की गई थी। जैस–जैसे सरकारी पैसा आना शुरू हुआ, वैसे–वैसे सरकारी धन की लूट का रास्ता खुलता चला गया। प्रधानों के मुंह लूट का स्वाद लगते ही उन्होंने स्वयं को गाँव के बजाय सत्ता केंद्रों से जोड़ लूट को स्थायी करने के लिए चुनावों में धन–बल, हिंसा और राजनीतिज्ञ पार्टियों का सहारा लेना शुरू किया। जो पैसा या शराब पर न बिके, उसे डराया–धमकाया जाने लगा।

उत्तर प्रदेश में पंचायतों के चुनाव में जो तस्वीर दिखाई दे रही है, वह तो बहुत ही भयावह है। प्रधान पद के प्रत्यासी रूपये, दारू के पाउच और गुटखा बांट रहे हैं। युवाओं को मुर्गा, शराब और अश्लील फिल्मों का घूस देकर अपने पाले में मिलाया जा रहा है। दूसरे प्रत्याशियों की हत्या की जा रही है। बूथ लूटे जा रहे हैं। फिर भी किसी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो पा रही है। प्रधान के हाथों विकास की तमाम योजनाएं सौंप, लूट के हिस्से को अफसरों से प्रधानों तक पहुँचाकर गाँव की समरसता खत्म की जा रही है।

ऐसे में सबसे जरूरी है कि मौजूदा पंचायती राज व्यवस्था की समीक्षा की जाए। अगर हमारे पास लूट रोकने की कारगर व्यवस्था नहीं है, तो बेहतर होगा कि पंचायतों को सीधे सरकारी धन उपलब्ध कराने के बजाय विकास कार्यों को तैयार करने, गाँव के दो तिहाई लोगों से स्वीकृत कराने और प्रधान के नेतृत्व में गुणवत्ता की निगरानी की जिम्मेदारी गाँव वालों को दी जाए। हर योजना को गाँव की दो तिहाई जनता से स्वीकृत कराया जाना चाहिए। विकास कार्यों से सम्बन्धित भुगतान पंचायतों की स्वीकृति से सरकारी तंत्र के माध्यम से होने पर जहाँ एक ओर लूट को रोका जा सकता है, वहीं प्रधान के पद के लिए मचे गलाकाट चुनाव को रोका जा सकता है। प्रधानों के हिस्से में जब लूट का पैसा आएगा ही नहीं, तो वे न तो चुनाव में पाउच और पैसा बांटेंगे और न ही हिंसा का सहारा लेंगे। व्यवस्था को तय करना होगा कि वह पंचायती राज व्यवस्था के सहारे गाँव को खुशहाल बनाना चाहती है या बदहाल। फिर उसी लक्ष्य की ओर क्यों न बढ़ा जाए?

(अमर उजाला, लखनऊ 23 अक्टूबर 2010 से साभार)

❑❑ प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

मदरसः का काम और ऐलान

–अली मियाँ नदवी रह0

"जब दुनिया में बिना मुरौवत (दो टूक) डँके की चोट पर कहा जाता है कि दुनिया में सिर्फ एक हकीकत जिन्दा है और सब मर चुकीं, नैतिकता मर चुकी, सच्चाई मर चुकी, इज़्ज़त मर चुकी, ग़ैरत मर चुकी, शराफ़त मर चुकी, आत्मगौरव मर चुका, इन्सानियत मर चुकी, सिर्फ एक हकीकत बाक़ी है और वह है नफ़ा उठाना और अपना काम निकालना, और हर क़ीमत पर इज़्ज़त बेचकर सिर्फ चढ़ते सूरज का पुजारी बनना है, उस समय मदरसः उठता है और ऐलान करता है कि इन्सानियत मरी नहीं है, वह कहता है नुक़सान में नफ़ा है, हार जाने में जीत है, भूख में वह लज़्ज़त है जो खाने में नहीं, उस समय मदरसः ऐलान करता है कि ज़िल्लत बाज मर्तबः वह इज़्ज़त है जो बड़ी सी बड़ी इज़्ज़त में नहीं। उस समय मदरसः ऐलान करता है कि सब से बड़ी ताक़त खुदा की ताक़त है, सबसे बड़ी सच्चाई हक़ की सच्चाई है। यह है मदरसः का काम। और अगर मदरसः (स्कूल) यह काम छोड़ दें और दुनिया के सारे काम करने लगें तो वह मदरसः कहलाने का पात्र नहीं।"

❑❑ ***प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी***

ख़वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

– अनु0: हबीबुल्लाह आज़मी – मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी रह0

औरतों की जंग में भागीदारी

महिलाओं ने युद्ध कला में जो कमाल पैदा किया है तथा युद्ध के मैदान में जो नुमायां काम अंजाम दिया है, इस्लाम के दुश्मनो के मुकाबले में वे जिस जोशो खरोश से लड़ी हैं, इतिहास के पन्ने इससे भरे हुए हैं। बहुत सी मिसालें ऐसी मिलेंगी जिस में वास्तव में विजय का श्रेय औरतों की मर्दानगी और वीरता को दिया जा सकता है। इनके नेज़े (भाले) हमेशा बुलन्द रहे हैं और इनकी तलवारें हर रणक्षेत्र में अपनी काट दिखाती रही हैं। औरतों ने खुदा की राह में न केवल गर्दनें कटवाई बल्कि वह युद्ध के तमाम कार्यो में सहायता व मदद करती रही है। घायलों की मरहम पट्टी, बीमारों की देखभाल, सिपाहियों का खाना पकाना, पानी पिलाना यह तमाम काम बड़ी सहाबियात और कभी–कभी खुद रसूल (सल्ल0) की पवित्र बीवियाँ अंजाम देती थीं। उहद के दिन युद्ध के मैदान में जाते समय हुज़ूर (सल्ल0) ने तमाम औरतों को हजरत हस्सान बिन साबित रजि0 के किले जैसे मकान में भेजवा दिया था और खुद हज़रत हस्सान रजि0 को उनकी रक्षा के लिए नियुक्त किया था। मदीना मुनौवरह में यहूदी आबाद थे अकस्मात एक यहूदी हालात की जानकारी लेने वहाँ आ गया। हजरत सफीयः रजि0 ने हजरत हस्सान बिन साबित रजि0 से उसको दूर करने के लिए कहा लेकिन उन्होने साहस नहीं किया, इसलिए वह खुद एक लकड़ी लेकर आगे बढ़ी और उसी से मार कर उस यहूदी का काम तमाम कर दिया। उहद की जंग में पहले मुसलमानों की हार के लक्षण दिखाई दिये। कुछ लोग भाग भी गये। जोश की हालत में औरतें मदीना से मैदाने जंग को चल खड़ी हुईं। उन्हीं में हजरत सफीयः रजि0 भी थीं। एक भाला लेकर मुजाहिदीन की सफ में घुस गईं। लोगों को तवीह करती (ताड़ना देतीं) और जिहाद की प्रेरणा देतीं थीं।

इस लडाई में इब्ने कमीदः नामी एक व्यक्ति ललकारता हुआ निकला कि मुहम्मद (सल्ल0) कहा हैं? आज अगर मैंने उनका काम तमाम न कर दिया तो मुझे मौत नसीब हो (नऊज बिल्लाह) मुसअब बिन उमैर रज़ि0 और बहुत से सहाबा हुज़ूर (सल्ल0) की ढाल बनने के लिए तैयार हो गये। इस टोली में एक औरत उम्मे अम्मारः भी शामिल थीं। यह महिला बहुत ही बहादुर और दिलेर थीं। ठीक जंग की हालत में अपनी पीठ पर मशक लादे–लादे फिरती थीं और प्यासों को पानी पिलाती थीं। इस लडाई में उन्हें बारह घाव लगे थे। इसके बाद खिलाफते सिद्दीक मे जब मुसैलमः कज्जाब के साथ जंग हुई, उसमें भी उम्मे अम्मारः ने वीरता के खूब जौहर दिखाये। यहां तक कि उनका हाथ इसी जंग में कट गया। इसके अतिरिक्त ग्यारह घाव शरीर के और भागों में थे।

काबिया रजि0 घायलों की देखभाल करती थीं। उनके लिए मस्जिद में हस्पताल कायम किया गया था। उम्मे सलीम रजि0 भी जंगे उहद में घायलों की मरहम पट्टी करती थीं। सिपाहियों को पनी पिलाने की सेवा भी उन्हीं को सुपुर्द थी।

हजरत उमर रजि0 के खिलाफ़त काल में रूमियों के साथ यरमूक के मैदान में बड़ी डरावनी लड़ाई हुई। मुसलमानों की संख्या से रूमी चौगुना अधिक थे। हमले में मुसलमानों ने पीछे हटना शुरू किया और हटते–हटते औरतों के खेमे तक पहुँच गये। औरतों ने अपने हाथ में खेमें की बांस बल्लियाँ ली और एक तरफ़ रूमियों पर हमला किया और दूसरी तरफ़ हटते हुए मुसलमानों को रोका ज़ोर–ज़ोर से पुकार–पुकार कर कहती थी अगर तुम ने पैर जमाकर जंग न की तो हमारा मुंह न देखना। उनकी वीरता का यह नतीजा हुआ कि मुसलमान अपनी जगह पर जम गये और इस तरह से जमे कि रूमियों का खात्मा करके उठे। जंग के दर्मियान अस्मा अंसारीयः ने एक मामूली लकड़ी से नौ काफ़िरों को कत्ल किया। अस्मा बिन्त अबीबकर का यह हाल था कि अपने पति हजरत जुबैर रजि0

के घोड़े की बाग से बाग मिलाए हुए दुश्मनों की फौज में घुस गई और सफें की सफें पलट दीं। हजरत जुबैर रजि0 जब वार करते तो उसके बिल मुक़ाबिल यह भी वार करतीं और वार में एक सिर शरीर से अलग नजर आता।

बनी उमय्या के खिलाफत के ज़माने में जब हज्जाज ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर का घेराव कर लिया तो यह अपनी माता (हजरत अस्मा रजि0) से सलाह लेने के लिए गये कि इस समय मुझे क्या करना चाहिये हजरत अस्मा रजि0 ने बहुत जोश भरी तक़रीर की और बताया कि–

"ऐ मेरे प्रिय बेटे! अपनी नीतियों को तुम भलिभाँति समझते हो लेकिन अगर तुम्हें पूरा विश्वास है कि मैंने जो मार्ग अपनाया है वह रब के आदेशों और अल्लाह की बताई हुई सीमाओं से बाहर नहीं है तो तुम को दृढ़ पग (साबित क़दम) रहना चाहिये कि अगर मारे जाओ तो शहादत का दर्जा मिलेगा। अगर जंग से तुम्हारा उद्देश्य दुनिया तलबी, शान शौकत और सल्तनत की चाह है तो याद रखो कि तुम से बुरा कोई नहीं होगा। खुद अपने को हलाकत में डालते हो और खुदा की मखलूक (लोगों) को तबाह कर डालते हो। निःसन्देह तुम्हारी यह आपत्ति सही है कि तुम तन्हा हो और तन्हाई की दशा में आज्ञा पालन के सिवा कोई चारा नहीं। मगर यह नीति शरीफों की नहीं हैं। मुझे बतलाओ कि तुम दुनिया में कब तक जिन्दा रहोगे। जब यह यक़ीन है कि मौत का एक समय निश्चित है जो घट–बढ़ नहीं सकता तो बेहतर यही है कि दुनिया में नेक नाम करो।"

इस जोरदार तक़रीर को देखो कि हर–हर शब्द असर में डूबा हुआ है। हर वाक्य ऐसा मालूम होता है कि हथियार बन्द फौज का एक दस्ता (टुकडी) है कि इनके भालों की नोकें जिगर के पार होती है।

यह नहीं कहा जा सकता कि औरते केवल मजहबी जोश के कारण आवश्यकता के समय शरीके जंग हो जाती थीं बल्कि वह हथियार चलाने की कला का भी नियम पूर्वक अभ्यास करती थीं। वह युद्ध में एक निपुण तलवार चलाने वाली और तीर अन्दाज़ की हैसियत से शरीक होती थीं। उनके निशाने बिलकुल सटीक और सही होते थे।

चुनानचे उम्मे अबान नामी एक खातून के शौहर दमिश्क की जंग में जनरल तूमा के हाथ से मारे गये। उन्होंने निश्चित किया कि मैं अपने शौहर का बदला उस जनरल से जरूर लूँगी। बहुत से मुसलमान सिपाहियों ने उनसे वादा किया कि हम अपने प्रिय भाई का बदला रूमियों से लेंगे लेकिन उस बहादुर औरत ने कहा कि मैं खुद बदला लूँगी और अपनी तलवार से तूमा का खात्मा करूँगी। दूसरी बार जब लड़ाई शुरू हुई तो तूमा फौज के बीचो–बीच नजर आया। चारों तरफ़ से फौज का टिड्डी दल उसे घेरे हुए थे। वहाँ तक पहुँचना कठिन था, इसलिए उम्मे अबान ने तीर का निशाना बाँधा और इस खूबी से मारा कि उसकी आँखों में घुस गया। और जनरल का ख़ात्मा हो गया।

उम्मे हकीम ने जंग अजनादीन में केवल एक टेंट के बांस से सात काफिरों को मारा। ख़ूलः बिन्ते अज़दर ज़र्रार मशहूर सरदार की बहन थी। अंताकिया में औरतों की खास टुकड़ी की सरदार थीं। यरमूक की लड़ाई में उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाई। तबअ बिन्ते मुऔव खुद जिहाद करतीं, सिपाहियों को पानी पिलातीं और शहीदों को जंग के मैदान से उठाकर मदीना मुनौवरह पहुँचाती थीं। बैअत उक़्बः में औरतों ने काफ़ी हिस्सा लिया। औरतें खुद अपनी बहनों को प्रेरणा देतीं थीं। चुनानचे बद्र की लड़ाई में अमीना गफ्फारिया के उत्साह दिलाने पर बहुत सी औरतें लड़ाई में शरीक हुईं। खन्सा बिन्ते अम्र अरब की मशहूर शायरा (कवित्री) गुज़री हैं। हुज़ूर सल्ल0 उनके अशआर (पद्य) खुद उनकी ज़बानी सुनते थे और बहुत प्रसन्न होते थे। कुदिसिः की जंग में शरीक हुईं। उनके चार बेटे भी मौजूद थे। उनको बुला कर खन्सा रज़ि0 ने एक जोशीली तक़रीर (भाषण) की और सबने शहादत का दर्जा हासिल किया।

औरतों की जंग का अगर विस्तार पूर्वक वर्णन किया जाए तो एक दफ्तर का दफ्तर तैयार हो जाए लेकिन इन कुछ नमूनों से उन घटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है कि औरतें देश और कौम की सेवा में पीछे न हटती थीं।

जारी.........

लाइब्रेरियों से दूरी विद्यार्थियों का दुर्भाग्य

–अकबर जाहिद

–अनु0 : एम0एच0 अंसारी

इस्लाम का भव्य भूतकाल हमें उन लाइब्रेरियों की याद दिलाता है जहाँ हमारी बहुमूल्य थाती सुरक्षित है। जब तक मुसलमान कुतुबख़ानों से करीब रहे, वह सारी दुनिया पर हुकूमत करते रहे, किन्तु जैसे ही उनका सम्पर्क लाइब्रेरियों से टूटा, और मुस्लिम हुक्मरानों ने उनकी सरपरस्ती करनी छोड़ दी, हुक्मरानी भी उनके हाथों से निकलती चली गयी। इतिहास साक्षी है कि जब भी किसी कौम ने इल्म की तरफ ध्यान दिया और उसे बढ़ावा दिया वह कौम कामयाब रही और हमेशा हुक्मरान रही। और वह कौम जो ज्ञान प्राप्ति से दूर रही वह नाकाम और पसमान्दा रही।

मुस्लिम शासकों ने सदैव ज्ञान प्राप्ति की ओर ध्यान दिया था, खुदा ने इस उम्मत को जो प्रथम सन्देश अपने सन्देष्टा पर 'वही' के ज़रियः दिया था वह था 'पढ़ो'........ इस लिये हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने भी अपने सहाबियों को ज्ञान प्राप्ति की ओर ध्यान दिलाया और कहा कि इल्म हासिल करने के लिये यदि चीन भी जाना पड़े तो उसे प्राप्त करो। चारों ख़लीफा और उनके बाद भी कई सदियों तक यह सिलसिला चलता रहा। आलीशान कुतुबखाने कायम होते रहे और इस्लाम ने सारी दुनिया को ज्ञान से माला माल किया। यह इस्लाम ही था जिसने आधुनिक संसार को अन्तरिक्ष, औषधिशास्त्र, रसायन शास्त्र, और न जाने कैसे कैसे ज्ञान दिये। लेकिन एक समय ऐसा आ गया जब मुसलमान ख़ुद इन चीज़ों से दूर हो गये। भोग–विलास में ऐसे डूबे कि उभरना भूल गये। कुतुबबीनी (किताबों का पढ़ना) और ज्ञान प्राप्ति की भावना उन के दिलों से निकल गयी और दुनिया की रँगीनियों में खो गये, तब ख़ुदा ने इन से हुक्मरानी छीन ली। और दुनिया की हुकूमत उस कौम के हवाले कर दी जो इल्म के क़द्रदान थे। आज उन विकसित देशों में सब से अधिक ध्यान लाइब्रेरियों पर दिया जाता है। अमेरीका, लन्दन, आस्ट्रेलिया, कनाडा और योरोपीय देशों के अधिकाँश वासी अपने बच्चों को कम से कम एक घँटा प्रतिदिन लाइब्रेरी में समय बिताने के लिये ले जाते हैं और इसमें यह लोग कभी कोताही नहीं करते।

इन देशों में बड़े बड़े सार्वजनिक पुस्तकालय होते हैं। अमेरीकन लाइब्रेरी ऑफ़ कॉंग्रेस, ब्रिटिश लाइब्रेरी आदि बेहद मशहूर हैं यहाँ तक कि हिन्दुस्तान में भी लाइब्रेरियों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है।

अगर कोई कौम लाइब्रेरियों को महत्व नहीं देती है तो वह है आज की मुस्लिम पीढ़ी। आज का मुसलमान प्रायः पुस्तकालयों तथा ज्ञान प्राप्ति से बेहद दूर है। कॉलेज में पढ़ता है तो उसका मक़सद यह होता है कि उसे कहीं अच्छी सी नौकरी मिल जाये। तालीम का मक़सद सिर्फ़ रूपया कमाना हो गया है। शोध और रिसर्च से हमारी क़ौम दूर भागती है और उसे इस बात से कोई लेना देना नहीं है कि मुसलमान आज किस हालत में है। वह क़ौम जो सदियों तक सारी दुनिया पर हुकूमत कर रही थी आज क्यों पत्नोन्मुखी है। इस की तरफ़ आज का मुसलमान सोचना भी नहीं चाहता। यह कितना दुर्भाग्य है उम्मत का कि ख़ुदा भी इस से नाराज़ है।

हालाँकि अगर आज भी उम्मत चाहे तो अपनी शान व शौकत दोबारा हासिल कर सकती है। ख़ुदा की नाराज़गी दूर की जा सकती है शर्त यह है कि वह वापस लौट आये। लौट कर उस जगह आये जहाँ से उसका सफ़र शुरू हुआ था, अर्थात् ज्ञान प्राप्ति की ओर, शोध व जिज्ञासा की ओर, अगर यह क़ौम वापस लौट आये तो आज भी हमें वह शक्ति प्राप्त हो सकती है जिसके बलबूते पर आज दूसरे हम पर हुकूमत कर रहे हैं।

(उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा लखनऊ (डाक) 15 सितम्बर 2010 से साभार)

हज़रत फ़ारूक़े आज़म की शहादत

—हज़रत मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी —अनु0 : फौज़िया सिद्दीका

फ़ारूक़े आज़म (रज़ि0) की शहादत इस्लाम के उन मसाइब में से है जिनकी तलाफी न हुई और न हो सकती है जिस दिन से वह मुसलमान हुए दीने इलाही की शौकत व इज़्ज़त बढ़ती गई और अपने अहदे ख़िलाफ़त में तो वह काम किये जिनकी नज़ीर कभी चश्मे फलक ने भी नहीं देखी और जिस दिन दुनिया से रुख़्सत हुए मुसलमानों का इक़बाल भी रुख़्सत हो गया।

मुख़्तसर हाल आप (रज़ि0) की शहादत का यह है कि जब आप (रज़ि0) अपने आख़री हज से वापस हुए तो वादी–ए–मोहएसब में अपनी चादर सर के नीचे रखे हुए लेटे थे चाँद की तरफ़ जो नज़र की तो उसकी रोशनी और उस की तस्वीर आप को अच्छी मालूम हुई फ़रमाया कि देखो इब्तिदा में यह कमज़ोर था फिर बढ़ते बढ़ते यह पूरा हुआ और अब फिर घटना शुरू होगा यही हाल दुनिया में तमाम चीज़ों का है। फिर दुआ माँगी की ऐ अल्लाह! मेरी रऔयत बहुत बढ़ गई है और मैं कमज़ोर हो गया हुँ कब्ल इसके कि मुझसे फ़राइज़े ख़िलाफ़त में कुछ कुसूर हो मुझे दुनिया से उठा ले'' उसके बाद मदीने में पहुँच कर आप (रज़ि0) ने ख़्वाब देखा कि एक सुर्ख़ मुर्ग ने आप (रज़ि0) के शिकम मुबारक में तीन चोंचें मारीं आप (रज़ि0) ने यह ख़्वाब लोगों से बयान किया और फ़रमाया कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब है उसके बाद यह हुआ कि एक रोज़ अपने मामूल के मुताबिक़ बहुत सवेरे नमाजे फज्र के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले गए उस वक़्त दुर्रह आप (रज़ि0) के हाथ में होता था और सोने वालों को अपने दुर्रे से जगाते थे, मस्जिद पहुँच कर नमाजियों की सफें दुरुस्त करने का हुक्म देते थे उस के बाद नमाज़ शुरु फरमाते थे, मस्जिद पहुँच कर नमाज़ में बड़ी बड़ी सूरतें पढ़ाते थे उस रोज़ भी आप (रज़ि0) ने ऐसा ही किया नमाज शुरु ही की थी, सिर्फ तक़बीर तहरीमा ही कह पाए थे कि एक मजूसी काफिर अबू लूलू ने जो हजरत मुग़ीरः (रज़ि0) का गुलाम था एक जहर आलूदा ख़नजर लिये हुए मस्जिद की मेहराब में छुपा बैठा था आप के शिक्मे मुबारक में तीन जख्म उस ख़नजर से लगाए गये जिससे आप (रज़ि0) उसी वक़्त बेहोश होकर गिर गये और हजरत अबदुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) ने आगे बढ़ कर बजाए आप (रज़ि0) के इमामत की और मुख़्तसर नमाज पढ़ाकर सलाभ फेरा।

अबू लूलू ने चाहा कि किसी तरह मस्जिद से बाहर निकल कर भाग जाए मगर नमाज़ियों की सफें मिस्ले दीवार के हाएल थीं, निकल जाना आसान काम न था, लिहाजा उसने और सहाबियों को ज़ख़्मी करना शुरू कर दिया इस तरह तेरह सहाबी और जख्मी हुए जिनमें से सात जॉबहक भी हो गये इतने में नमाज ख़त्म हो गई और अबू लूलू पकड लिया गया जब उसने देखा कि मैं गिरफ़्तार हो गया हूं तो उसी खनजर से उसने अपने को हलाक कर लिया।

इतना बड़ा अलमनाक वाक़िआ हुआ मगर किसी मुसलमान ने नमाज नहीं तोड़ी, नमाज पूरे इतमिनान के साथ ख़त्म की गई नमाज़ के बाद हज़रत फ़ारूक़ आज़म (रज़ि0) को लोग उठा कर उनके मकान पर ले गये थोड़ी देर के बाद आप (रज़ि0) को होश आया और आप (रज़ि0) ने फ़ज्र की नमाज़ उसी हालत में अदा की।

सबसे पहले आप (रज़ि0) ने सवाल किया कि मेरा क़ातिल कौन है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने कहा अबू लूलू मजूसी काफिर यह सुन कर आप (रज़ि0) ने तकबीर ऐसी बुलन्द आवाज से कही कि बाहर तक आवाज गई और फरमाया कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने एक काफ़िर के हाथ से मुझे शहादत अता फरमाई। यह अबू लूलू एक मर्तबा हज़रत फारूके आज़म की ख़िदमत में शिकायत ले कर गया था कि मेरे मालिक ने मुझ पर महसूल ज़्यादा बाँधा है आप (रज़ि0) इस में कमी करा दीजिये आप (रज़ि0)

ने महसूल की मिक़दार दरयाफ़्त की और पूछा कि तू क्या काम करता है? उसने कहा मैं चक्की बनाता हूँ आप (रजि0) ने फ़रमाया कि इस काम का करने वाला अरब में तेरे सिवा कोई नहीं, लिहाजा यह महसूल काम के लिहाज से जाइद नही है, फिर आप ने फरमाया कि एक चक्की हमारे लिए भी बना दे उसने कहा बहुत अच्छा आप (रजि0) के लिये ऐसी उम्दा चक्की बना दूँगा कि तमाम दुनिया में उस की शोहरत होगी, आप (रजि0) ने फ़रमाया कि देखो यह गुलाम मुझे कत्ल की धमकी देता है किसी ने कहा अमीरुलमुमेनीन! आप (रजि0) हुक्म दें तो अभी उसको गिरफ्तार कर लिया जाये आप (रजि0) ने फरमाया कि क्या जुर्म से पहले सजा दी जाये? उसी वक्त से अबू लूलू ने एक खनजर बनाना और उसको आग में बुझाना शुरू किया और आप के कत्ल की फ़िक्र में रहा।

हजरत फारूके आजम (रजि0) के इस हादसे की खबर ने पूरे मदीने में एक कोहराम बरपा कर दिया तमाम मुहाजिरीन (रजि0) व अन्सार (रज़ि0) आप (रज़ि0) को घेरे हुए बैठे थे और कह रहे थे कि काश हमारी उमरें आप (रजि0) को दे दी जाऐं और आप (रजि0) अभी इस्लाम की खिदमत के लिए कुछ दिनों और कायम रहें।

दवा और इलाज की भी कोशिश की गई मगर कोई तदबीर न हुई जब सहाबा किराम (रजि0) को यह मालूम हुआ कि अब आप की जिन्दगी की कोई तवक्कुअ नही है तो उस वक्त अजीब हसरत सब को थी। सब ने जाकर आप (रजि0) से कहा कि अमीरुलमुमेनीन अल्लाह तआला आप (रज़ि0) को जजाए ख़ैर दे आप (रजि0) ने किताबुल्लाह की पैरवी की और आंहजरत (सल्ल0) की सुन्नतों पर अमल किया उसके बाद आप (रजि0) ने हजरत सुहैब (रजि0) को अपनी जगह इमाम बना दिया और फरमाया कि मेरे बाद तीन दिन के अन्दर अन्दर खलीफा का इन्तेख़ाब कर लेना।

फिर आप (रजि0) ने अपने साहबजादे हजरत अब्दुल्लाह (रजि0) से फरमाया कि उम्मुलमुमेनीन हजरत आइशा (रज़ि0) के पास जाओ और मेरी तरफ से बाद सलाम के अर्ज करो की मेरी दिली ख़्वाहिश यह है कि मैं अपने साहिबैन यानी आंहजरत (सल्ल0) और हज़रत अबू बक्र (रजि0) के साथ दफ़न किया जाऊँ अगर इस में आप को कुछ तकलीफ या नुक्सान हो तो फिर जन्नतुलबकी मेरे लिये बेहतर है चुनांचे हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि0) गये और उम्मुलमुमेनीन को पैगाम पहुँचाया उन्होंने फरमाया कि वह जगह मैंने अपने लिये रखी थी मगर अब मैं उन को अपने ऊपर तरजीह देती हूँ। जिस वक्त अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि0) ने आप को यह ख़बर पहुँचाई तो आप खुश हुए और कहने लगे कि अल्लाह का शुक्र है कि मेरी सबसे बडी ख़्वाहिश यही थी वह भी उसने पूरी कर दी। उसके बाद फिर नजअ की हालत शुरूअ हो गई उसी हालत में एक जवान आप (रजि0) के पास आया जिसकी इज़ार टख्नों से नीचे थी आप (रजि0) ने फरमाया कि ऐ भतीजे जरा इज़ार टख्नों से ऊँची रखा करो, इसमें कपड़ा भी साफ रहता है और खुदा की इताअत भी है। जब आप (रजि0) का जनाजा नमाज के लिये लाया गया तो हजरत अली (रजि0) ने फरमाया कि मुझे पहले से यही ख्याल था कि आप (रजि0) का दफन भी रसूले खुदा (सल्ल0) के साथ होगा क्योंकि मैं सुना करता था कि हजरत (सल्ल0) हर बात में अपने जिक्र के साथ आप दोनो का जिक्र किया करते थे और हजरत अली (रजि0) ने फरमाया कि मैं खुदा से दुआ मांगा करता था कि या खुदा जैसा नाम–ए–आमाल उमर बिन खत्ताब (रजि0) का है मेरे आमाल भी वैसे ही हो जाए।

27 जि0ही0 को बरोज चहार शम्बह जखमी हुऐ थे और पाँचवें दिन यकुम मुहर्रम बरोज एकशम्बह 63 साल की उम्र में रिहलत फरमाई। हज़रत सुहैब (रजि0) ने नमाजे जनाज़ह पढ़ाई और खास रौजे नबवी में अबू बक्र सिद्दीक (रजि0) के पहलू में आप (रजि0) की कब्र मुबारक बनाई गई रौज़–ए–मुकद्दस के अन्दर सिर्फ तीन कब्रें हैं एक रसूले खुदा (सल्ल0) की, दूसरी हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि0) की तीसरी हज़रत उमर फ़ारूक (रजि0) की। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि0) का सरे मुबारक अपने आकाए नामुदार (सल्ल0) के शानए अक़दस के बराबर है और हज़रत उमर फ़रूक (रजि0) की कब्र मुबारक बाई जानिब।

❑❑❑❑

आबे ज़मज़म : स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

डॉ० एच०डी० सिद्दीकी

आबे ज़मज़म को हज पर जाने वाले न सिर्फ़ बड़े चाव से पीते हैं बल्कि केन में भर कर लाते भी हैं। इसके बारे में एक बड़ी दिलचस्त घटना है। बात 1971 ई0 की है। एक मिस्री डॉक्टर ने यूरोपीय अख़बारों में ख़त लिखा कि आबे ज़मज़म अब पीने योग्य नहीं रह गया। उसका कहना था कि मक्का शहर का सारा गंदा पानी ज़मीन में रिसकर ज़मज़म में जाकर मिल जाता है।

यह ख़बर जब शाह फ़ैसल को मिली तो उन्होंने ज़मज़म के पानी व उसके स्रोतों के जांच का हुक्म दे दिया। उनके मंत्रालय ने यह काम पॉवर एंड डेस्लोशन प्लांट (Power and Deslotion Plant) को सौंपा जो समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाकर पीने योग्य बनाती है। प्लांट में बतौर केमिकल इंजीनियर मलिक अहमद सुरूर कार्यरत थे जिनको तहकीक का काम सौंपा गया। उस समय सुरूर साहब को ज़मज़म की गहराई, लंबाई व चौड़ाई के बारे में कुछ मालूम न था।

जब वे मक्का पहुंचे तो उन्हें वहां के प्रशासन ने एक सहयोगी दे दिया जो जांच के लिए ज़रूरी सामान उपलब्ध कराने के लिए था। जब वे ज़मज़म कुँए के पास पहुंचे तो यह देखकर दंग रह गये कि इस 14 गुणा फीट के छोटे कुँए से हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) के वक़्त से लेकर अब तक करोड़ों गैलन पानी निकाला जा रहा है। अहमद सुरूर ने अपने सहयोगी को पानी की गहराई पता करने के लिए कुँए में उतारा। पानी का लेबल उसके कंधे से ज़रा–सा ऊपर तक था।

इस सहयोगी ने सीधे खड़ा रहकर पूरे कुँए का चक्कर लगाया लेकिन उसे कहीं पानी आने का स्रोत नहीं मिला।

सुरूर साहब ने पम्प मशीन के ज़रिए पानी बाहर निकलवाना शुरु किया ताकि कुँए को खाली करके यह देखा जा सके कि पानी ज़मीन में कहां से आ रहा है। इस दौरान उनका सहयोगी कुँए में सीधा खड़ा रहा। लेकिन जितना पानी निकलता उतने ही तेज़ी से कुँआ भरता जाता। सुरूर साहब ने स्रोत मालूम करने के लिए अपने सहयोगी से कुँए की सतह को पैरों से टटोलने के लिए कहा।

उस आदमी ने बताया कि कुँए में हर जगह रेत उसके पैरों के नीचे रेंगती महसूस हो रही है। यानि पानी सब जगह से बराबर निकल रहा था। आखिर में उन्होंने पम्प मशीन बन्द कर दिया और पानी का नमूना लेकर कम्पनी वापस आ गये। उन्होंने जबसे यह घटना अपने अँग्रेज़ बॉस को सुनाई तो उसने यक़ीन नहीं किया। उसने कहा कि ज़मज़म का स्रोत बहरे अहमर से मिला होगा। विचारणीय है कि बहरे अहमर वहा से 75 कि0मी0 दूर है।

यूरोपीय लेबोरेट्रीज ने भी जमजम के पानी की जाँच की पावर एण्ड डेस्लोशन प्लांट व यूरोपीय लेबोरेट्रीज दोनों की रिपोर्ट आबे ज़मज़म के बारे में करीब एक जैसी थी। यूरोपीय लेबोरेट्रीज ने कहा कि पानी शुद्ध एवं पीने योग्य है तथा स्वास्थ्य के लिए बेहतर है। वहीं पावर एवं डेस्लोशन प्लांट की रिपोर्ट में तफसील बताते हुए कहा गया कि यह आम पानी से अलग है इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम का अंश अधिक है जिससे थके हुए हाजियों को ताज़गी मिलती है। इसके अलावा इसमें क्लोराइड है तथा यह कीटाणु नाशक भी है।

❑❑❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

बाबरी मस्जिद का इतिहास

- डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

सन् 1986 में अगर फ़ैजाबाद के वकील उमेश चंद्र पांडेय की अपील पर जिला जज कृष्ण मोहन पांडेय ने जन्म भूमि का ताला खोलने का आदेश न दिया होता तो शायद इस विवाद का संघर्षपूर्ण अध्याय न शुरू होता। अगर उन्होंने उन्नीसवीं सदी के फैजाबाद के सब–जज हरि किशन के 24 दिसम्बर 1885 के आदेश के पीछे काम करने वाले न्यायिक विवेक पर गौर किया होता तो शायद ऐसा न करते। इस संवेदनशीलता का परिचय जिला जज एफ0ई0ए0 चैमियर ने महंत रघुबर दास की याचिका खारिज करते हुए दिया था। महंत की माँग थी कि उन्हें राम चबूतरे पर राममंदिर के निर्माण की इजाज़त दी जाए। बाद में ज़िला जज टीईए चामनी ने और ज़्यादा संवेदनशीलता दिखाते हुए पहले वाले जज की महंत समर्थक कुछ टिप्पणियों को हटाने का भी आदेश दिया। चैमियर ने माना था कि जहाँ सन् 1528 में बाबरी मस्जिद बनी है, वह हिन्दुओं की पवित्र जगह रही है लेकिन अब 358 साल बाद इस मामले में यथास्थिति बनाए रखने के अलावा कुछ नहीं किया जा सकता है। आमतौर पर यह देखा गया है कि अंग्रेज़ों ने अपनी फूट डालो और राज करो की नीति के तहत सांप्रदायिक विवाद के प्रतीकों को ज़िन्दा रखा था। पर यहाँ उनमें न तो न्यायिक नासमझी दिखाई पड़ती है न ही न्यायिक देरी। उन्होंने इस मामले पर फैसला लेने में एक साल से ज़्यादा का समय नहीं लिया। उसकी तुलना में आजाद भारत में फैज़ाबाद के ज़िला मजिस्ट्रेटों और जजों ने ज़्यादा ढिलाई और कम सूझ–बूझ का परिचय दिया।

दिसम्बर 1949 में फैज़ाबाद के जिला मजिस्ट्रेट के0के0के0 नैयर की 'निगरानी' में मस्जिद परिसर में मूर्तियाँ प्रकट होने का जो 'खेल' हुआ, सारे स्थानीय जज उसे ही समर्थन करते नजर आए। दिलचस्प बात है कि मूर्तियाँ रखे जाने की एफआईआर अयोध्या थाने में सब–इंस्पेक्टर राम दूबे ने दर्ज की थी। आधुनिक अयोध्या विवाद की आधारशिला रखने वाले के0के0के0 नैयर साहब अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को छुपा नहीं सके और बाद में चुनाव लड़ कर पराजय का स्वाद भी चखा। अगर हम बाबरी विवाद के बारे में ब्रिटिश न्यायपालिका से आज़ाद भारत की न्यायपालिका की तुलना करते हैं तो हमारा न्याय बहुत देर से आयद लगता है। पहले 1949 में कार्यपालिका के खेल का समर्थन कर लोकतांत्रिक भारत की स्थानीय न्यायपालिका ने अपना पक्षपात दिखाया और जब मामला सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँचा तो कार्यपालिका ने उसके आदेश की अवहेलना की। रथयात्रा और कारसेवा के उन्मादी दौर में सुप्रीम कोर्ट ने 23 जुलाई 1992 को स्पष्ट आदेश दिया था कि कोई भी कारसेवा विवादित स्थल पर नहीं होनी चाहिए। उसे मानने के लिए उत्तर प्रदेश की कल्याण सिंह सरकार ने आश्वासन दिया था। हर तरफ यही सवाल उठ रहा है कि हाई कोर्ट के इस आदेश या बाद में आने वाले सुप्रीम कोर्ट के आदेश का कार्यपालिका किस हद तक और कब तक पालन करेगी? क्योंकि आज ज़रूरत विधि के विवाद की नहीं विधि के विधान की अयोध्या बनाने की है।

□□□□